RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 3 अंक 2 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद की पहली लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका अक्टूबर 2019

पेज संख्या : 36 राजसमंद

लोक लीला 'गवरी'

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

नवरात्रि एवं दीपोत्सव की
समस्त हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
Vijay Singh Rajput
Senior Insurance Advisor
LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA
MDRT®
USA Qulified
2019
+91 9950806366, 9929630221
vijaysinghrajput143@gmail.com
Kumbhalgarh Road, Puthol-Rajsamand (Raj.)
We Cover You at your every stage of Life
Smart Child Education
Fabulous Marriage
Smartly Estate Creation
Free From Loan Liability
Happy Retirement
I CAN HELP YOU IN YOUR ALL FINANCIAL SOLUTIONS

Tension®
Tension Tower
No Tension
Tension
Durgesh Singh Bhati
7230059101
Bhupendra Singh Bhati
8769955630
Manufacture & Wholesaler of jeans, Shirt & Readymade Garments
999 में 4 शर्ट
999 में 2 जिंस
Shop No. 2, 100ft. Road, In Front of Kawadiya Hospital, Rajsamand (Raj.)
Tel. : 02952-221144 E-mail : tensionjeans1993@gmail.com

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा

सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान

सम्पादन सहयोगी
सूर्यप्रकाश दीक्षित

विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
गणपतसिंह

वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 99500-84705

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क मात्र 200 रुपए

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101

सम्पादकीय

स्वच्छ भारत- पॉलीथिन मुक्त भारत

जब बात स्वच्छ भारत की आती है, तो बरबस ही महात्मा गांधी के सपने की याद आ जाती है। वो सपना जिसमें गांधीजी ने साफ सुथरे और स्वस्थ भारत की परिकल्पना की थी। आजादी के बाद साल दर साल गुजरते गए, कई सरकारें आई और चली गई, परन्तु गांधीजी का वो स्वप्न आज भी अधूरा सा प्रतीत हो रहा है। ऐसी बात नहीं है कि बीते वर्षो में इसके लिए कोई प्रयत्न नहीं हुए। सभी सरकारों ने अपनी ओर से भारत को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने के लिए अनेक प्रयास किए हैं, मगर ऐसा लगता है कि वो प्रयास वोटो की राजनीति की भेंट चढ़ गए हैं, सरकारें आम जनता या कारोबारियों पर सख्ती दिखाने से बचने की कोशिश करती रही है। महात्मा गांधी के उसी सपने को पूरा करने के उद्देश्य से 2 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत की, जिसमें उन्होंने 'न गंदगी करेंगे, न करने देंगे' का मंत्र दिया। पूरे देश में स्वच्छता सैनिक बनाए, घर घर में शौचालय बनवाने का प्रयास किया। देश के शहर, गांवों, सड़कों, नदियों, घाट आदि को स्वच्छ रखने के लिए युवाओं को जागरूक किया। प्रधानमंत्री की इस मुहिम का फायदा भी हुआ और देश के करोड़ो लोगों ने स्वच्छता की मुहिम में खुद को हिस्सेदार बनाया।

आज जब भी 'स्वच्छ भारत का इरादा कर लिया हमने' बोलता हुआ वाहन घर के पास आता है, घर के सदस्य कचरा इकट्ठा कर उस वाहन के घर के सामने आने का इंतजार करते हैं, जबकि पहले वहीं कचरा घर के बाहर एक जगह एकत्रित कर दिया जाता था या फेंक दिया जाता था।

अगर बड़े बड़े शहरों में प्राकृतिक आपदा की बात करें या फिर गायों की अकाल मृत्यु की बात करें तो सबसे बड़ा कारण प्लास्टिक होता है। लगभग 500 वर्ष तक नष्ट ना होने वाला प्लास्टिक जमीन में जाकर धरती को बंजर कर देता है। इसीलिए 11 सितंबर को शुरू हुए 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' के तहत सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को कम करने का फैसला लिया गया, जिसमें जनता से सहयोग की अपेक्षा की गई है। इसके समाधान के लिए 'निज पर शासन फिर अनुशासन' के मूलमंत्र पर चलते हुए हमें अपनी भूमिका भी सुनिश्चित करनी होगी, क्योंकि अभियान कोई भी होए अगर आमजन का सहयोग ना मिले, तो सकारात्मक परिणाम की आशा बेमानी ही होगी। यदि देश को स्वच्छ एवं स्वस्थ रखना है, तो पहले हमें करनी होगी। प्लास्टिक का उपयोग कम से कम करना, पौधरोपण करना, पानी को सहेजना आदि काम हमें अपनी जिम्मेदारी समझते हुए करने पड़ेंगे। स्वच्छता को प्राथमिकता देते हुए इसे पाठ्यक्रम में जोड़ना चाहिए, ताकि छोटे से बच्चो में भी स्वच्छता के बीजों का अंकुरण हो सकें।

अतिथि सम्पादक

प्रकाश जांगिड़ 'प्रांश'
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** लोक लीला – गवरी — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** संविदाकर्मी की जांच अटकी — पेज – 3
3. **सत्य मीठा होता है** — पेज- 9
4. **नारी** — पेज- 10
5. **गांधी जयंती विशेष :** गांधीजी का करिश्माई व्यक्तित्व — पेज – 12
6. **कड़वा सच :** सोनाक्षी और कौन बनेगा करोड़पति — पेज – 13
7. **तीखी मिर्ची :** सिर्फ सुर्खियां — पेज – 15
8. **माटी का लाल :** समाजसेवा के प्रेरणापुंज दीपचंद जी — पेज – 16
9. **गुमनाम शख्सियत :** यशवंत का ध्येय आहत की सेवा — पेज – 18
10. **मेरा गांव मेरे लोग :** पहले नगरपालिका अध्यक्ष बिहारीलाल ठाकुर — पेज – 24
11. **व्यंग्य :** नोट वाले गांधी — पेज – 26
12. **कविताएं :** राजसमंद री झील, वो एक लम्हा — पेज- 27
13. प्रकृति की सीख — पेज – 28
14. **मेवाड़ी चौपाल :** हेठानी रो चटकारो — पेज – 30
15. **व्यंग्य :** कौन खुश है, हमसें, आपसे ? — पेज – 31

लोक लीला 'गवरी'

लोक माइथॉलोजी कहती है कि गौरी सावन में सहेलियों के साथ रमण के लिए पीहर आती है और एक माह तक सखियों संग उसकी लीलाओं का मंचन है यह खेल 'गवरी'। मात्र मेवाड़ क्षेत्र में खेली जाने वाली यह नृत्य नाटिका भरत मुनि के आदि एवं शास्त्रीय नाट्य की मर्यादा का पूरी तरह पालन करती है। दो मुख्य नट होते हैं, जिन्हें कुटकड़िया कहते हैं– ये एन्कर होते हैं तथा सारे कथानक को बांधे रखते हैं।

गौरी के प्रतीक के रूप में दो 'राइयां' स्थिर पात्र के रूप में पूरे समय उपस्थित रहती है और उनकी शक्ति पूरे वातावरण एवं पात्रों में व्याप्त रहती है। शिव के प्रतीक के रूप में 'राई बूढिया' (गौरी का बूढ़ा पति– चूंकि शिव युवा गौरी के वृद्धि पति ही है) रहता है। यह पेसिव पात्र है, जो कि शिव का मूल स्वभाव है और कभी भाव में नहीं आता है।

राइयां शक्ति की प्रतीक है। अत: सक्रिय खेल में पूरे समय भाव में रहती है। बूढिया अकेला पात्र है, जो पूरी नाटिका के पात्रों के जनरल ताल में समूह नृत्य करते समय, जो कि दो खेलों के बीच प्रारंभ एवं समाप्ति पर किया जाता है और उसे 'गाई' कहा जाता है– उल्टी दिशा में नृत्य करता है। यह भारतीय अध्यात्म के मूल सिद्धांत के अनुसार प्रतीक रूप में की जाने वाली सार्वत्रिक स्थापना का रूपक प्रदर्शन है और इसको देखकर यह पता चलता है कि नृत्य नाटिका के संयोजन और स्थापना करने वाले लोगों का दर्शन उतना ही गहरा और लयबद्ध रहा होगा, जैसा यह सनातन धर्म है। यह कि शिव ब्रह्म का प्रतीक है और शक्ति (पूरा खेल) माया का और ये दोनों एक होते हुए भी विरोधी स्वभाव वाले होते हैं, यही यह पात्र दर्शाता है।

इस नाटिका में कई गौण और कुछ मुख्य मंचन होते हैं। विभिन्न रसों का संयोग है, परन्तु मुख्य रस 'वीर रस' है। नए परिवेश से तालमेल बिठाने को समय समय पर आदिवासी लोग छोटी मोटी व्यंग्य कारिकाएं और विनोद भी बीच बीच में जोड़ते रहते हैं। लोक कथाओं और गाथाओं को अच्छे से संजोया है और धर्म से जोड़ा गया है, जिससे उनका सकारात्मक लाभ लिया जा सके। हम स्थानीय हैं, अत: पात्रों की पहचान एवं भूमिका से सभी परिचित हैं। सो इस पर अधिक बात न करके नाटिका के आधारों की ही चर्चा करेंगे।

यहां विभिन्न मूल्यों एवं प्रकृति संरक्षण को भी धर्म से जोड़ा गया है, जिससे उसकी रक्षा हो सके। जैसे 'राजा और वरजू कांजरी का खेल'। कैसे राजा (धारानगर एक प्राचीन नगरी का) 'बड़ल्या हिंदवा' (नवलाख देवताओं का एक वटवृक्ष) कटवा देता है और 'शक्ति' कांजरी का रूप धारण कर उसकी राजधानी में आकर उसे दण्ड देती है। शक्ति उसके किसी प्रलोभन को स्वीकार न करके केवल वचन लेती है और मृत्युदंड से पूर्व वृक्ष के बीजारोपण से लेकर विभिन्न देवों के पेड़ को बड़ा करने एवं सुरक्षा देने के श्रम का आख्यान सुनाती है। बताती है कि कैसे अनन्त अनन्त देव तत्वों की प्रतिस्थापना उस बट में थी और तुम्हारा अपराध अक्षम्य है।

प्राचीन कबिलाई धारणाओं और विभिन्न जातियों के परम्परागत मूल्यों तथा रोजगारों का दर्शन भी विभिन्न खेलों 'हरकू जांगड़', 'मीणा- बंजारा' में होता है। दिनचर्या की छोटी- छोटी बातों का एवं व्यवहार का सुन्दर मंचन किया जाता है। जैसे ''सेठों व जांगड़ की कथा''। स्त्रियोचित्त ईर्ष्या एवं विभिन्न भाव 'बंजारियों के खेल' में देखने को मिलते हैं।

यह भादों मास में खेली जाती है। जब कृषि प्रधान मेवाड़ के खेतों में काम बहुत कम होता था और आधे दिन बाद लोग अव्यस्त होते थे। आदिवासीजनों के पास जमीन नहीं या कम होती थी। ऐसी स्थिति में उनको रोजगार देने हेतु भी यह लाभदायी रहा।

विभिन्न मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को भी इस खेल में धार्मिक आधार देकर खूबसुरती से जोड़ा गया है, ताकि वे क्रियाएं एक दायरे में मान्य हो जाएं और सामाजिक तथा व्यक्तिगत रुग्णताओं का निकास हो जाए। 'भाव' ऐसी ही एक क्रिया है। हर व्यक्ति या जीव में भाव सृष्टि प्रक्रियागत रूप में विद्यमान रहता है और वह ऊर्जा रूप है। जीव जन्तु

तो अविचारी हैं, अत: वे तो भाव के अनुसार ही चलते हैं, परन्तु मनुष्य विभिन्न सामाजिक कारणों से भावों को दबाता है। इसका अगर समय पर निकास न हो तो रोग का कारण बनता है। पुराने भारतीय मनीषियों ने इसे धर्म के साथ जोड़ कर अलग अलग धार्मिक अनुष्ठानों द्वारा देवालयों में रेचन की प्रतिष्ठित विधियां बनाई, ताकि कुलीन लोग भी अपना रेचन कर सकें।

गवरी में इसका सघन तथा व्यापक वातावरण दिया जाता है, ताकि क्रोध (रौद्र) व करुण जैसे चरमभाव निकल सकें। हास्य में गाली और अपशब्दों को भी इस नाटिका में मान्यता दी, ताकि व्यर्थ 'वाणीदमन' की भी निकासी हो सकें। जैसा कि होली धुलेंडी तथा विवाह में 'गाली गायन' में भी इसकी व्यवस्था की है। अत: गवरी में भी प्रतिष्ठित स्त्री पुरुष अपनी चरम उत्तेजनाओं को सार्वजनिकरूपेण प्रकट कर सकते हैं एवं उसे आदर रूप में ही देखा जाता है।

मध्यकाल में इसे अज्ञानवश आध्यात्मिक माना जाता रहा, परन्तु अब तो यह केवल मनोवैज्ञानिक तथ्य है। ऐसा पश्चिम भी ठीक से जानता है, लेकिन यहां अभी भी अशिक्षावश धार्मिक कृत्य बना हुआ है और ऐसा मनीषी जानते थे। अत: उन्होंने इसे निर्विवाद रूप से धर्म से जोड़ दिया।

यह नाटिका एक माह तक खेली जाती है। तब तक सभी खेळे (अभिनेता) अपने घर नहीं जाते और ग्राम के देवालय जहां ज्योति की स्थापना की जाती है, में ही रहते हैं। इसे 'मंड' कहा जाता है। जब खेळे अन्य गांवों में नाचने जाते हैं, तब पूर्व रात्रि वहां के किसी देवालय में रूकते हैं। तब भी निज ग्राम के देवालय में कुछ प्रमुख बुजुर्ग (भोपा लोग) पूरे समय उपस्थित रहकर अखंड ज्योति प्रज्वलित रखते हैं। नित्य पूजा आरती करते हैं तथा यहीं से मंचन का कार्यक्रम तय करते हैं। खेळे पूरे माह स्नान नहीं करते, हिंसा नहीं करते, सात्विक भोजन और एक ही समय लेते हैं। सभी स्त्री भाव में रहते हैं- 'गौरी स्वरुप'। स्त्रियोचित गहने पहनते हैं, शृंगार करते हैं, जो कि अपनी विभिन्न साधना पद्धतियों का अंग है।

यह साज और कहीं नहीं मिलता। काफी मदभरी थाप वाला यह साज मिट्टी का बना होता है और दोनों चर्मपुड़ियों पर जई के आटे के लेप पर बजने को तैयार हो जाता है।

विभिन्न पात्रों के साथ एवं घटनाओं पर बजने वाली धुन सुनिश्चित है, जिसे सुनकर ही मेवाड़ी समझ लेते हैं कि अभी यह पात्र अभिनयरत है।

अंतिम रात्रि को 'गड़ावन' का मंचन होता है, बाकि पूरे मास सभी मंचन दिन में होते हैं। अंतिम दिन 'वलावन' का अर्द्धदिवसीय मंचन और फिर विलय कर दिया जाता है– गोरज्या की प्रतिमा का। पूर्व रात्रि को भोर से पहले 'भोल्या भूत' एक पात्र आता है, तब माना जाता है कि गौरी को लेने के लिए शिव आ गए हैं और सुबह गौरी विदा हो जाती है। देखकर स्थानीय ऐतिहासिक घटनाओं का भी स्मरण आता है। जैसे अंग्रेजकाल में राणकपुर सायरा घाटा में मीणा– बंजारा का युद्ध, व्यापार का नाका होना, अंग्रेजों की कर वसूली आदि। चित्तौडगढ़ पर अलाउद्दीन का हमला भी 'किला तोड़' नाटक में देखने को मिलता है।

संवाद शैली गेय है। लोकगाथात्मक प्राकृत सुरों के साथ है और मदभरी है। गेय संवाद विचित्र एवं चमत्कारी प्रभाव पैदा करते हैं। सारा मंचन भाव प्रधान है। थोड़ी– थोड़ी देर में मादल की थाप, बड़े घुंघरुओ की रुणझुण, वरद और आह्वान के स्वर और भोपाओं के हाथ खनखनाती सांकले दूर वादी में आपके रोंगटे खड़े कर देती है। समय के बदलने से अब खोने से अपने को बचाती सी लगती है। यह 'गाथा' न जाने कब **गाथा** हो जाए।

युद्ध से पहले महाभारत में अज्ञातवास में अर्जुन के लिए यह प्रयोग हमें दिखाई पड़ता है। अपना वल्लभ सम्प्रदाय, बंगाल का सखी सम्प्रदाय इसी के पूर्णकालिक रूप है।

खेलने की व्यवस्था में गांव की बेटियों के ससुर ग्राम में 'मंचन' की परम्परा है। हर एक बेटी को कम से कम एक बार अपने खर्च पर इसका मंचन करवाना होता है। मंचन से एक दिन पहले सूचना आ जाती है, इसे 'झंडा आना' कहते हैं एवं स्वीकृति देने को 'झंड झेलना' कहते हैं। खेळे पूर्व संध्या को आ जाते हैं एवं दूसरे दिन दोपहर 12 बजे से मंचन प्रारंभ होकर शाम 6 बजे तक होता है। यह गांव के चौपाल या कोई प्रांगण के बीच मंचित होती है और दर्शक चारों ओर बैठते हैं। शुरुआत में 'गाई' भरी जाती है और दो समूहों में खड़े होकर एक दूसरे को सम्बोधित करते हुए गेय संवाद शैली में इतिहास गाते हैं, जिसे 'भारत बोलना' एवं 'गेलोरियां गाना' कहते हैं। कार्यक्रम बड़े अनौपचारिक रूप से चलता रहता है और दर्शकों में घुला मिला सा रहता है।

लोग शोकिया भी नचवाते हैं। अधिकतर गांवों में नाचती है, पर शहरीकरण के कारण शहरों में भी मंचित होती है– रात्रि को। क्योंकि दिन में शहर व्यस्त होता है। कभी कभार मेवाड़ियों के इलाकों में मुंबई के चौराहों पर भी (रात्रि) पहुंच जाती है।

इसमें काम लिया जाने वाला साज 'मादल' मृदंग का प्राकृत रूप है। यह लोक साज है। इस खेल से जुड़े होने के कारण

धन्वन्तरि जोशी
राजसमंद

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

संविदाकर्मी की जांच अटकी

निजी स्कूल संचालकों को धमकाकर कतिपय दुकान से स्टेशनरी खरीदने के दबाव का आरोप

अधिकारी बोले- बाबू नहीं है, ऑपरेटर से काम करवाना मजबूरी

हितेन्द्रसिंह चौहान
जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समग्र शिक्षा विभाग राजसमंद में संविदा पर कार्यरत कम्प्यूटर ऑपरेटर प्रांजलसिंह झाला के विरुद्ध दर्ज की शिकायत की दो माह बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हो पाई। पूर्व मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी मधुसूदन व्यास ने शिकायत के बाद एक बार प्रारंभिक शिक्षा विभाग की आरटीई शाखा से हटा दिया था, मगर कुछ ही दिनों बाद वापस लगा दिया गया। इससे पूरे शिक्षा विभाग की भूमिका संदेह के घेरे में है कि आखिर एक संविदा पर कार्यरत कम्प्यूटर ऑपरेटर के विरुद्ध दो माह बाद भी संगीन आरोप होने के बावजूद जांच पूरी नहीं क्यों नहीं हो पाई ?

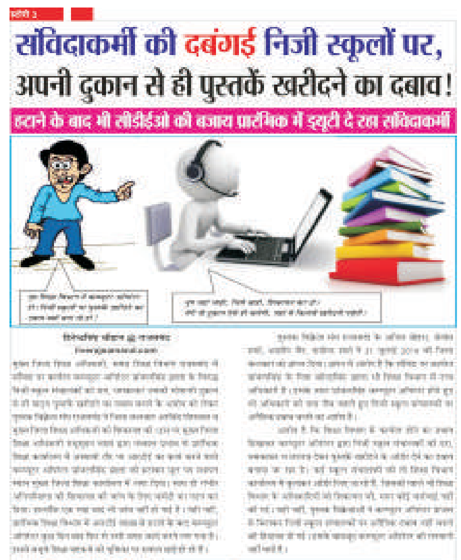
संविदाकर्मी की दबंगई निजी स्कूलों पर, अपनी दुकान से ही पुस्तकें खरीदने का दबाव!
हटाने के बाद भी सीडीईओ की बजाय प्रारंभिक में ड्यूटी दे रहा संविदाकर्मी

पुस्तक विक्रेता संघ राजसमंद के अनिल बोहरा, श्रेयांस शर्मा, आशीष जैन व दामोदर शर्मा ने 31 जुलाई 19 को कलक्टर को शिकायत दर्ज कराई। उनका आरोप था कि संविदाकर्मी प्रांजलसिंह झाला द्वारा निजी स्कूल संचालकों पर अनैतिक दबाव बनाकर उसी की स्टेशनरी दुकान से पाठ्य पुस्तकें खरीदने के लिए बाध्य किया जा रहा है। जांच के लिए नारायणसिंह चुंडावत व नारायण सिंह राव को आदेश दिए, जिनके द्वारा आरोपी प्रांजलसिंह को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया, तो प्रांजलसिंह ने जवाब दे दिया कि न तो उसके नाम पर कोई स्टेशनरी की दुकान है और न ही उसके द्वारा किसी भी निजी स्कूल संचालक पर दबाव बनाया गया कि कतिपय दुकान से ही पाठ्य सामग्री खरीदी जाए। उसके बाद जांच दल ने पुस्तक विक्रेता संघ के कार्यकर्ताओं से भी उनके द्वारा लगाए गए आरोपों के प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए कहा गया। इसके तहत कम्प्यूटर ऑपरेटर द्वारा कुछ निजी स्कूल संचालकों को डरा, धमका कर उसी दुकान से ही पुस्तकें खरीदने के दबाव के आरोप की ऑडियो रिकॉर्डिंग सीडी ही जांच दल को उपलब्ध करवा दी गई। इस तरह प्रारंभिक तथ्यों के साथ जांच दल ने रिपोर्ट मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी बताई, जहां से सीडी की ऑडियो रिकॉर्डिंग की प्रमाणिक व क्रॉस जांच के आदेश दे दिए, लेकिन उसके बाद करीब एक माह गुजर गया, लेकिन जांच दल द्वारा कोई अग्रिम जांच नहीं की है।

कॉल डिटेल जांच में भी कतरा रहा विभाग

जिस कम्प्यूटर ऑपरेटर पर अनैतिक दबाव का आरोप है, उसके मोबाइल की कॉल डिटेल जांच के लिए भी मांग की गई, मगर शिक्षा विभाग द्वारा अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई।

जिम्मेदार स्टाफ की कमी से परेशान

शिक्षा विभाग के जिम्मेदार अधिकारी से शिकायत के बारे में पूछा गया, तो वे स्पष्ट बोले कि शिक्षा विभाग बाबू ही नहीं है। कम्प्यूटर ऑपरेटर को हटाने के बाद भी वापस प्रारंभिक शिक्षा में लगाने के सवाल पर बोले कि स्टाफ की बहुत कमी है। इस कारण कम्प्यूटर ऑपरेटर को वापस लगाया है। क्योंकि न तो पर्याप्त स्टाफ है और न ही अन्य कार्मिकों से यह कार्य करवाया जा सकता है।

अब आ गया बाबू, हटा देंगे ऑपरेटर को

अब तक कोई स्टाफ नहीं था, मगर अब एक लिपिक की नई नियुक्ति हुई है, जिसे आरटीई शाखा का कार्य सिखाया जा रहा है। जल्द ही उस कम्प्यूटर ऑपरेटर को वहां से हटा दिया जाएगा।

सोहनलाल रेगर, डीईओ प्रारंभिक एवं कार्यवाहक सीडीईओ राजसमंद

अभी तक नहीं हुई पूरी जांच

हां, प्रारंभिक जांच कर तथ्यों से सीडीईओ को वैसे ही बताया, तो उन्होंने सीडी व ऑडियो रिकॉर्डिंग की प्रमाणिक जांच के लिए कहा है कि वह आवाज किसकी है, उसकी प्रामाणिक जांच करें। तभी आरोप को सही माना जा सकता है। उसके बाद अब जांच सहयोगी नारायणसिंह चुंडावत द्वारा की जा रही है।

नारायणसिंह राव, जांच अधिकारी शिक्षा विभाग राजसमंद

सत्य मीठा होता है

अक्सर हमें कभी कभार यह सुनने को मिल ही जाता है कि सत्य कड़वा होता है और सच्चाई हमेशा कड़वी लगती है, लेकिन सत्य कड़वा क्यों होता है और क्या यह सभी इन्सानों को कड़वा लगता है या किसी किसी को ? क्या यह सत्य है कि सत्य कड़वा होता है ? इसका जवाब हमें सत्य की गहराई से विवेचना करने पर ही मिल सकता है।

इस प्रश्न का उत्तर तलाशने से पहले हमें सत्य को समझाना होगा कि आखिर सत्य है क्या ? वह वर्णन जो किसी घटना या कर्म को हूबहू प्रदर्शित, प्रचारित या प्रसारित करता हो, वही सत्य है। ऐसा कथन जिसमें रत्तीभर भी कपटता का समावेश नहीं हो और जो इस जगत के सभी प्राणियों के लिए अत्यन्त हितकारी हो, वही सत्य है।

सत्य वो है, जो कल था, आज है और कल भी रहेगा। असत्य वो है, जो कल नहीं था, आज है और कल नहीं रहेगा। जब दो 'नहीं' के बीच आज है, तो उसका अस्तित्व भी क्षणभंगुर ही होगा। अपनी वाणी और वर्तन से किसी को दु:ख न हो और किसी का बुरा न हो, यही सत्य का भाव है। इस मार्ग पर चलने वाले को अनुपम सुख की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्तियों के हर कर्म विघ्नमुक्त और उपलब्धिमूलक रहते हैं।

जो इंसान सत्मार्गी और स्पष्टवादी है, वो न तो स्वयं संशय में जीता है और न ही औरों को किसी प्रकार के संशय में डालता है। ऐसे लोगों के तमाम पारिवारिक व सामाजिक रिश्ते- नाते तथा मित्र नि:स्वार्थ भावनाओं की अटूट डोर से बंधे हुए होते हैं। ये लोग निष्काम कर्म तथा अपने बौद्धिक मूल्यों के बूते आशातीत सफलता अर्जित करते हैं और मन वांछित ऐश्वर्य को प्राप्त करते हैं। चुंकि सर्वजन कल्याण की भावना को हृदय में बसाकर ही सत्य बोला जा सकता है। लेकिन इस संसाररूपी बाड़े में कुछ पशुवृंद प्राणी ऐसे भी होते हैं, जो राजा भर्तृहरि द्वारा रचित ग्रंथ शतकत्रयम् के खंड नीतिशतकम् के दोहे में उल्लेखित 'मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति' को आत्मसात करते पाए जाते हैं। ऐसे लोग आत्महीनता से भरे हुए होते हैं और इनकी जीवटता दिन रात सुख-भोग के संसाधन जुटाने तक ही सीमित रह जाती है। अपने ऐशो आराम के संसाधनों को पाने के लिए ये किसी भी प्रकार के दुष्कर्म करने से भी नहीं चुकते।

क्रोध, मन, माया और लोभ के कारण इंसान झूठ का सहारा लेता है। इन लोगों का मुख सदैव मलीन रहता है। इनकी कोई व्यक्तिगत उपलब्धियां नहीं होती है। इस संसार से कुछ भी पाने के लिए इन्हें सदैव बैसाखियों का सहारा लेना पड़ता है।

ऐसे मनोरंजन प्रधान ज़िदगी जीने वाले व्यभिचारियों को अपने भौतिक सुख- सुविधाओं के संसाधनों को प्राप्त करने के लिए दिन में कई बार झूठ का सहारा लेना पड़ता है और इस कारण अपने समकक्ष विचारों वाले आकाओं के कभी गुणगान करने पड़ते हैं, तो कभी अपने स्वार्थ सिद्धी के लिए इनके पैरों में नाक रगड़नी पड़ती है। जब ऐसे लोग कभी जीवन मूल्यों की सत्यता से रूबरू होते हैं या अनायास ही सच्चाई से परिचित हो जाते हैं, तब इन्हें सत्य कड़वा लगता है। ऐसे लोगों को जीवन का यथार्थ बेमानी सा प्रतीत होता है और इनके जीवन की सार्थकता वस्तुत: संदिग्ध होती है।

दूसरी ओर निष्काम कर्मयोगी इंसान अपने अनथक प्रयासों से समाज को ऐसे आसमां पर ले जाने को प्रयासरत रहते हैं, जहां परोपकारी बादल अनवरत प्रेम की वर्षा करते रहते हैं। ऐसे लोग किसी भी परिस्थिति में अपने सत्मार्ग से विमुख नहीं होते हैं। इन सत्मार्गी इंसानों को सत्य मीठा भी लगता है और इनके दिलों दिमाग को आनंदमयी सुकून भी देता है। इसलिए कर्म ऐसे करो कि आपका आत्मानंद कभी खंडित न हो और आपको सत्य हमेशा मीठा लगे।

वाचस्पति देराश्री
युवा लेखक भाटोली
सूचना एवं जन संपर्क कार्यालय
राजसमंद

नारी

'यत्र नार्यस्तु पूजन्ते, रमन्ते तत्र देवता'

जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। यहां पूजा से तात्पर्य उसकी आरती उतारने से नहीं है, अपितु उसके यथोचित सम्मान व उसके अस्तित्व की रक्षा से है। सामाजिक और पारिवारिक क्षेत्र में उचित सम्मान से है।

नारी को देवीतुल्य माना गया है। नारी तो साक्षात् सृजन करती है। स्वयं नारायण की जन्मदात्री है। समस्त चराचर में 'या देवी सवयभुतेषु मातृरूपेण संस्थिता' के रूप में विराजित है, पूजनीय है। अखिल ब्रह्मांड का पोषण करती है। ममतामयी अगाध प्रेम का पोषण व करती है। प्रेम के साथ ही इसका त्याग भी गौरवपूर्ण रहा।

''नारी त्याग में समाही है,
समता, सुनिता, करुणा महान की,
भावना की पुतली है, स्पंदन है ये विश्वह्रदय की
ये करुणामयी मां है, यशोदा भगवान की।''

स्वयं विष्णु ने यशोदा मैया को अपनी अद्भूत बाल क्रीड़ाओं से व प्रेमलीलाओं से समस्त चराचर को आल्हादित किया। मां का स्थान सर्वोपरि रखा।

''देखो जिसके कितने अहोभाग्य है,
दुलारती है, पुचकारती है, रिझाती है,
खीझाती है करुणानिधान को
ये रूप है सृष्टि विधायनी मां का।
जो कण कण में करती संचरित प्राण का
फूंकती है प्रेरणा जीवन विधान की
वह महाशक्ति है, दुर्गा है, वही शिवा है
रिक्ता से जिसकी शिव शव है
केवल मांसपिण्ड है संसार का
देखो जिसके कितने अहोभाग्य है।''

जो स्वयं नारायण की जन्मदात्री है, इससे ज्यादा महानता का क्या परचिय है एक स्त्री का। दूसरी ओर वही स्त्री राधा के रूप में प्रभु की अर्द्धनारीश्वर रूप में नारी को वामांगिनी बनाकर उसे जीवन में सर्वोच्च स्थान देते हैं, तो नारी की महानता स्वयं प्रदर्शित हो जाती है। यहां तक की असुरों के भय व आतंक से आहत देवता जगतपिता परमेश्वर से स्तुति करके अपने समस्त स्वर्गलोक, भूलोक को बचाने की प्रार्थना करते हैं, तो भगवान कृष्ण भी अपनी आह्लादय शक्ति को आज्ञा देकर 'काली' के रूप में उन्हें संसार के लिए प्रस्तुत करते हैं। चण्ड मुण्ड असुरों के वध के लिए 'चामुण्डा' के रूप में ही असुरों का संहार करती है। जब जब विनाश का समय आया तो देवताओं को बचाने वाली भी एक दिव्य नारी ही थी। नारी में ही एकमात्र ऐसी शक्ति है, जो सृजन तथा संहार कर सकती हैं।

''नारी के अनेक रूप समझ न आवे भाई,
देखो करके विचार थोड़ा मन में
महामही माता है विशाल हृदय भावना की
मां कहूं, माया कहूं, मोहनी कहूं
या कहूं शक्ति विधाता की।''

नारी ही समस्त संसार को पोषित करती है। अपने रक्त व मांसमज्जा से पुरूष शरीर का निर्माण करती है, पुरूष उत्पति का कारण बनती है, वंश को आगे बढ़ाती है।

जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त निराला, महादेवी वर्मा आदि कई विख्यात कवियों ने भी नारी पर व उसके सौन्दर्य व सम्मान में बहुत कुछ लिखा है। मेरे ये चन्द शब्द 'नारी' को परिभाषित करने में सुक्ष्म से प्रतीत होते हैं।

सदियों से पुरूषवर्ग से नारी शोषित व प्रताड़ित हुई है। क्यो ? नारी की महानता जानते हुए भी मात्र उसे भोग्या या परिवार का लालनपालन करने की मात्र वस्तु समझा जाता है।

पुरूषवर्ग स्त्री को वो सम्मान नहीं दे पाते, जिसकी वो अधिकारी होती है। क्यों ? उसका शारीरिक व मानसिक शोषण होता है। आज भी अल्पशिक्षित समाज उसे हीनता की दृष्टि से देखता है। वर्तमान समय में नारी का बदला हुआ पुरूष विद्रोही रूप प्रकट हो रहा है, जिसका कारण नासमझ पुरुषवर्ग है। जिस यथोचित सम्मान की वो अधिकारी रही, उसका सदा ही अभाव सा रहा। इस विद्रोही स्वरुप को वर्तमान में नारी ने प्रतिस्पर्द्धा के रूप में लेकर कई उच्च पद पर आसीन हुई। शिक्षा हो, खेल जगत हो, जल, थल, वायु सेना या अन्य किसी भी क्षेत्र में अपने अदम्य साहस, शौर्य व निपुणता का अद्‌भुत परिचय करवाया है। किसी भी क्षेत्र में वो पुरूष से कमजोर साबित नहीं हुई है।

''नारी जब हुंकारती है, प्रेरणा जब पुकारती है
सिंह को ललकारती है, दुष्ट को धिक्कारती है।''

आज नारी को यथोचित आरक्षण की नहीं संरक्षण की आवश्यकता है, जिसके अभाव में आज नारी सशक्तिकरण अभियान पुष्टीकरण के रूप में साबित हो रहा है।

वर्तमान में जो 'बेटी बचाओ व बेटी पढ़ाओ' का जो नारा दिया जा रहा है, वो नारी को हीन भावना की ओर ले जा रहा है। वह स्वयं कन्या भ्रूण हत्या की ओर अग्रसर हो रही है। वह जानती है, एक वह स्वयं नारी रूप में उचित सम्मान प्राप्त नहीं कर पाई। वह स्वयं को असुरक्षित व असहाय महसूस करती है। बालपन में व्यभिचार की शिकार हो रही है, तो कहीं एसिड अटैक से जलाई जा रही है। नारी को बलात्कार नहीं परम्परागत स्वागत सत्कार व वरण चाहिए। अपना उचित स्थान चाहिए, जिसकी वो स्वाभाविक रूप से हकदार है। न्यायपूर्ण संरक्षण व साथ चाहिए। पुरूषवर्ग का अंहकारपूर्ण तिरस्कार नहीं चाहिए। तलाक ही एकमात्र संबंध विच्छेद वाली कुमानसिकता नहीं, बराबर का हक चाहिए। जब तक पुरुष मानसिकता में बदलाव नहीं आएगा, नारी के प्रति तब तक नारी प्रताड़ना होती रहेगी। नारी के लिए स्वच्छ मानसिकता पुरूष को व्यवहार में लानी होगी। सदियों से जो परीक्षाएं नारी की ली जा रही है, उसके अस्तित्व व मानसम्मान को लेकर इससे उसके रौद्र रूप प्रकट हुए है व हो रहे हैं।

मैं स्वयं नारी हूं और नारी भावना को समझ सकती हूं, महसूस करती हूं, अपने शब्दों को विराम देते हुए बस यही कहना चाहती हूं कि एक 'नारी को यथोचित मानसम्मान दें, उसकी आपके जीवन में क्या भूमिका है, उसे समझे, उसे महत्त्व दें व उचित संरक्षण, उचित स्थान दें। यहीं पुरूषवर्ग के लिए अपने आप में उसकी पूजा है, देवतुल्य सुखद संसार हैं।'

विनीता उपाध्याय
महादेव कॉलोनी कांकरोली
मो. 88905-33444

गांधीजी का करिश्माई व्यक्तित्व

सत्य और अहिंसा को अपना धर्म मानने वाले मोहनदास कर्मचन्द गांधी स्वाधीनता संग्राम के राजनैतिक और आध्यात्मिक नेता थे। सादगी, सत्याग्रह, सत्य और अहिंसा को एक सफल मनुष्य जीवन का मूल मंत्र मानते थे। गांधीजी के इन्हीं आदर्शो से प्रभावित होने के बाद आचार्य रविन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें महात्मा अर्थात् महान् आत्मा का दर्जा दिया था। गांधीजी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सत्य की व्यापक खोज में समर्पित कर दिया। अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंनें स्वयं अपनी गलतियों पर प्रयोग आरम्भ किया। अपने अनुभवों को उन्होंने अपनी आत्मकथा 'माई एक्सपेरिमेन्ट्स विद ट्रुथ' में अभिव्यक्त किया था। अंग्रेजों के शासन काल में देशभर में महिलाओं के अधिकारों और धार्मिक एवं जातीय एकता को बढ़ावा देने के लिए गांधीजी के नेतृत्व में कई आंदोलन चलाए गए। अस्पृश्यता को जड़ से मिटाने के लिए उन्होंने कई यात्राएं की। विदेशी शासन से मुक्ति दिला भारत की जनता को आजाद कराना ही उनका मुख्य ध्येय था।

ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाए गए 'नमक कर' के विरोध में गांधीजी के नेतृत्व में विशाल नमक आन्दोलन 1930 में दांडी मार्च तथा 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों का नेतृत्व कर उन्होंने प्रसिद्धि प्राप्त की। महात्मा गांधी के चिंतन के कई पहलू है, जिनको आज के समय में याद किया जाना काफी आवश्यक है, पर यह चिन्ताजनक तथ्य है कि उनके अवदान पर चर्चा करने के बजाय आज गांधीजी के बारे में बेवजह ऐसे पहलुओं को तूल दिया जा रहा है जिनका कोई अर्थ ही नहीं है।

यह तथाकथित विदेशी बुद्धिजीवी कहे जाने वालों की देन है जो भारतीय चिंतन को चिंतन नहीं मानते। इनका ध्यान गांधी, अम्बेडकर व आजादी के लिए अपनी कुर्बानी देने वाले महापुरूषो के बारे में अनावश्यक चर्चाओं पर ज्यादा रहता है। जैसे क्या खाते थे ? कैसे रहते थे ? कैसे चलते थे ? उनके क्या शौक थे ? आदि। गांधीजी का मूल विचार तों सत्य, अहिंसा, व सत्याग्रह का रास्ता दुनियां को दिखाने का रहा है। महात्मा गांधी एक और पर्यावरण प्रेमी नजर आते हैं, तो दूसरी और राजनीतिक व्यक्ति एवं दार्शनिक। वे पर्यावरण की महत्ता दर्शाते हुए कहते है– 'धरती के पास सबका पेट भरने के लिए सबकुछ है, पर हम जिस तरह जी रहे हैं, उससे तो चार पांच धरती भी कम पड़ेगी।

गांधीजी के चिंतन को हम समष्टि के रूप में देखें तो व्यक्ति और समाज प्रकृति व ईश्वर से अलग नहीं है। कुछ लोग षड्यंत्रपूर्वक उनके बारे में अनर्गल प्रचार करते रहे हैं। प्रश्न है कि आखिर गांधी क्या थे? वे राजनीतिक रूप में कुशल रणनीतिकार थे, तो एक बड़े दार्शनिक भी। आजादी के आन्दोलन को उन्होंने बड़ी कुशलता पूर्वक जन आंदोलन के रूप में खड़ा किया। हम देखते है कि जब गोपाल कृष्ण गोखले पटल पर थे, तब आजादी का आन्दोलन बुद्धिजीवियों के हाथ में था। गांधीजी ने इसे गरीब, दलित और मध्यमवर्ग से जोड़ा। वे प्रकृति के नजदीक संत और राजनीतिज्ञ नजर आते हैं। यह अंतर्सबंध उनके जीवन से जुड़ी हर घटनाओं में नजर आता है। अनेक राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय सेमीनारों में यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि बाहर के बुद्धिजीवी भी गांधी को महामानव का दर्जा देते हैं। दुर्भाग्य इस बात का है कि हमारे यहां विदेश से कोई बात आती है, तब ही उस पर मोहर लगती है। हमारा योग बाहर जाकर योगा हो जाता है, तो सब मानने लगते हैं। गांधीजी ने गरीब और अमीर के बीच खाई पाटने का कार्य किया। पश्चिमी विचारक एरिक्शन ने अपनी पुस्तक 'मोहनिया टू महात्मा' में गांधी को करिश्माई व्यक्तित्व का धनी बताया।

आज गांधी को सिस्टम के हाथों बिसराया जा रहा है। पिछले वर्षों में हमने देखा है कि सत्ता में आने के लिए राजनीतिक लोगों ने गांधी का सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया। वे सत्ता पर काबिज भी होते गए, लेकिन जब गांधी के सिद्धांतों और नीतियों को लागू करने का मौका आया, तो पीछे हट गए। गांधी के आदर्शो को किताबों से बाहर लाने की जरूरत है।

सवाल यह है कि आखिर गांधी दर्शन का प्रचार प्रसार कैसे हो ? इसके लिए मेरा यह मानना है कि सर्वप्रथम गांधी को पढ़ने-पढ़ाने वालों को भी खुद गांधी के अनुरूप ही ढलना होगा। युवा पीढ़ी गांधी के सत्याग्रह आंदोलन से किस तरह से जुड़ी हमने यह अन्ना हजारे, बाबा रामदेव के आंदोलन में देखा है तथा किस तरह मोदीजी युवाओं के आंदोलन एवं समर्थन के फलस्वरूप ही सत्ता पर काबिज हुए।

गांधी कहते थे- 'प्रथम पुरूष एक वचन की शुरूआत तुमसे ही है, हम चाहें तो व्यवस्था के खिलाफ खड़े हो सकते हैं। पहले स्वयं में ही वह भाव जगाना होगा।'

दु:ख होता है कि वर्ष में दो दिन उनकी प्रतिमा या समाधि पर फूल चढ़ाकर हम अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं।

गोड़से की गोली से गांधी सिर्फ
एक बार मरा है।
गांधी के भक्तों से गांधी
एक बार नहीं, सौ बार मरा है।
सच की जोत जगाई उसने
सेवा की बात बताई उसने
चरखा कात, साधा था श्रम को
जीने की राह दिखाई उसने।

मुरलीधर कनेरिया
साहित्यकार, नाथद्वारा

सोनाक्षी और कौन बनेगा करोड़पति

सवाल- हनुमानजी संजीवनी बूटी किसके लिए लाए ? सोनाक्षी का जवाब : राम, नहीं-नहीं सीता के लिए

20 सितंबर की रात के समय अपने सारे कार्यो से निबट कर रोज की तरह टीवी पर कौन बनेगा करोड़पति कार्यक्रम देखने बैठ गया। हर बार के शुक्रवार की तरह इस बार भी कोई सामाजिक कार्य एवं लोगों की मदद करने वाले किसी कर्मवीर व्यक्ति को आना था।

बॉलीवुड एक्ट्रेस सोनाक्षी सिन्हा को राजस्थान से आई रूमा देवी की सहायता के लिए बुलाया गया था। दरअसल, 'कौन बनेगा करोड़पति' के 11वें सीजन में राजस्थान की रूमा देवी ने बतौर 'कर्मवीर' प्रतिभागी हिस्सा लिया था। सोनाक्षी खास मेहमानों के पैनल में शामिल थीं और रूमा की मदद कर रही थी।

आप अपने बच्चो को कहां पर पढ़ाते हैं। ये आपकी मर्जी है, किंतु अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में बच्चों को पढ़ाते हुए इस बात का ध्यान जरूर रखें कि वो अपनी संस्कृति से दूर तो नहीं हो रहे। आज का ये प्रोग्राम देखने के बाद अपने हिंदी माध्यम से पढ़ने पर काफी गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

मुझे आज एक बड़े संयुक्त परिवार का सदस्य होने पर काफी गर्व महसूस हो रहा है और आज भी उस समय को याद कर रहा हूं, जब मैंने अपनी आठवीं से दसवीं कक्षा की पढ़ाई करते हुए साल 1988 से 1990 के बीच टेलीविज़न पर आए दो धार्मिक धारावाहिक रामायण और महाभारत को पहली बार देखा।

कहीं ना कहीं वो आज भी मेरे मन के पटल पर अंकित है। खैर बात करते हैं, 20 सितंबर 2019 के धारावाहिक 'कौन बनेगा करोड़पति' की। मानाकि आजकल हमारे पास समय नहीं है ? ये देखने का है कि हमारे बच्चे टेलीविजन पर क्या देख रहे हैं, परन्तु यदि सिर्फ हम उन्हें अपने परिवार के साथ ही जोड़े रखे, तो अपने बड़े बुजुर्गों से उन्हें काफी पौराणिक ज्ञान मिलेगा।

अब बात करते हैं सिने तारिका सोनाक्षी के बारे में, सोनाक्षी सिन्हा के पिता का नाम शत्रुघ्न सिन्हा है और वो काफी समय से बतौर राजनीतिज्ञ काम कर रहे हैं। एक खास बात प्रभु राम के छोटे भाई का नाम भी यही है। अमिताभ बच्चन द्वारा पूछा गया एक सवाल कि रामायण में हनुमान जी संजीवनी बूटी किसके लिए लाए थे और सोनाक्षी का जवाब- कभी राम और कभी सीता जी के लिए लाए थे।

खैर, जैसे तैसे लाइफ लाइन की मदद लेते हुए सही जवाब दे ही दिया। यहां ये बताना जरूरी है कि सोनाक्षी जी के चाचा का नाम लक्ष्मण सिन्हा, राम सिन्हा और भरत सिन्हा है और सोनाक्षी के भाईयो का नाम लव एवं कुश सिन्हा है। लीजिये बातो ही बातों में सारे रामायण के किरदार इनके परिवार में ही मिल गए, लेकिन प्रोग्राम में पूछे गए एक प्रश्न में सोनाक्षी को ये भी नहीं मालूम था कि हनुमान जी संजीवनी बूटी किसके लिए लाए थे ?

अभी मैं सोनाक्षी की इन्हीं बातो से स्तब्ध था कि पता चला कि जिस बिल्डिंग में वो रहती है, उसका नाम भी रामायण है। अब ऐसे लोगो को क्या कहा जाए, जो सिर्फ दिखावे के लिए धार्मिक नाम रख लेते हैं, बाकी उन नामो की वास्तविकता से उनका कोई वास्ता नहीं है। धन्य है, ऐसे लोग और धन्य है हम जैसे लोग, जो इन्हें फॉलो भी करते हैं और इनकी फिल्में देखने के लिए हमेशा लालायित रहते हैं।

नीरज त्यागी
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल 09582488698

Are We Balanced?

We are all sitting on a tipping point; therefore, the key to save ourselves is **'BALANCE'.**

Have you ever thought why the sun is up in the sky and moon appears in the night, why do the planets have their own position and earth has life? The perfect position of all these and constant working actually makes this world exist. Against the scene, a slight imbalance of inner earth results in to earthquake, extreme rain causes flood while no rain causes drought. The five elements and their perfect role creates a human life and little or more of one affects the same, little more cold air makes the weather cold and more heat of sun makes the days hotter. That means balance of nature is very essential for the survival of life.

We all want nature to be balanced so that we could have a desired happy life and so we pray sometimes for more and sometimes for less. Prerak, a farmer friend of mine, had a worry that his crop might get damaged if a little more rain is there. However, this is not new for him; he had a similar worry last year due to fewer amount of rain. Is this only Prerak or everyone? We rightfully expect the nature to be balanced but wouldn't the nature be expecting the same in return? There are several questions to be asked not to others but to self –

Are we balanced? Are we trying to maintain balance between-

- Thoughts and actions
- Saying and doing
- Pleasurable activities or joyful activities
- Expectations and responsibilities

These are the very broad ones but let me restrict myself to the nature's balance and our role. Can we balance between uses and misuses of-

- Naturally available resources
- Our own made resources

A small survey states that more than 80% people are unable to differentiate between use and misuse. A teacher once told that every literate person feels he/she possesses a good knowledge of everything but when it comes to the use of that knowledge in practical life, majority of them get failed to balance, especially, when resources are freely available to us. Our intellectual capabilities should not be just utilised to extract maximum crop from the earth, maximum water from ground, maximum coal from mines, maximum energy from resources etc. Rather, our focus should be to use the extraction for our need. Mahatma Gandhi also pointed out, "The earth has everything for the need but not for the greed."

We are undergoing a big change; therefore, it is time to be more attentive. The resources available are not the right but the responsibility hence we need to learn how to be balanced and simultaneously make the society learn the same. If it is not done now, our imbalanced natures will faster the process of natural imbalance and we will be responsible for our future.

Be the change you want to see - Mahatma Gandhi

Manisha Lashkari

Principal

Smart Study International School Nathdwara

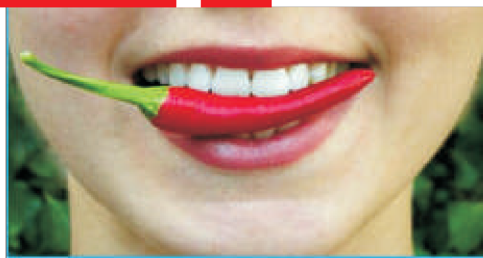

तीखी मिर्ची

ऑफ द रिकॉर्ड :
जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिएं-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

सिर्फ सुर्खियां

विजय शर्मा @ राजसमंद
Jaivardhan Patrika

कवि, साहित्यकारों को हिन्दी की पूरी वर्णमाला प्रिय होती है। मगर राजनेताओं को वर्णमाला का 'ग' अक्षर अधिक सुहाता है। इस अक्षर से बने शब्दों का जिक्र सियासत के मंचों पर अक्सर होता रहता है। जैसे- गरीब, गाय, गंगा और गन्दगी। चुनावों के बिगड़े बोल में कभी एक दूसरे को गधा शब्द से भी नवाजा जाता रहा है।

स्वतंत्रता के बाद से गरीब का नाम लेकर ही भाषण चलते रहे हैं। क्योंकि राजनीति के मंचों पर रोज रोज नया स्क्रिप्ट भी कौन लिखने बैठे, आखिर कर्मठ राजनेताओं को और भी कितने काम होते हैं। वहीं भारत का बिचारा गरीब, उसे क्या चाहिए उसका जिक्र बड़े नेताजी ने इतने बडे मंच से कर दिया, वो भी क्या कम है। गरीबी उन्मूलन के नाम पर कई सरकारी योजनाएं बनी, मगर इन योजनाओं के बाद भी गरीब तो गरीब ही रहे, मगर राजनेता अमीर होते चले गए।

समय के साथ रोज 'गरीब' शब्द सुन सुन कर गरीबों के भी कान पकने लग गए थे और असर यह हुआ कि राजनीति की पुस्तैनी दुकानों पर धीरे धीरे ग्राहकी कम होने लगी थी। ऐसे समय में नई राजनैतिक पौध ने नए नामों को अपने भाषण में जगह दी। अब गरीब के साथ गाय और गंगा का नाम भी लिया जाने लगा। नए नेताओं के नए शब्द मिलने से राजनीति में पुन: जान आ गई। नए नाम के उच्चारण से देश की जनता के साथ साथ विदेशों में भी सुर्खियां मिलने लगी। ये शब्द राजनीति की उन्नत फसल के लिए असरकारक खाद का काम करते हैं। पहले गरीब के नाम पर योजनाएं बनती थी, मगर अब गाय बचाने और गन्दगी हटाने के लिए भी बनती है। इन योजनाओं के बड़े बड़े होर्डिंग, पेम्पलेट और बैनर तैयार किए जाते हैं। इन योजनाओं की मंचीय औपचारिकताओं के बाद अक्सर सड़क पर बिखरे इन पेम्पलेट को स्वयं खाकर गाय स्वच्छता का संदेश देती नजर आती है।

इसी तरह हाल ही में सिंगल यूज प्लास्टिक की थैली बन्द करने की कवायद शुरू हुई। पर्यावरण व गाय को बचाने के लिए इसे आवश्यक समझा गया। महात्मा गांधी जयंती के मौके पर सम्पूर्ण देश में प्लास्टिक थैली बन्द कर दी जाएगी, यह खबर पिछले दो महिनों से अखबार व टीवी की सुर्खियों में रही। सभी दुकानदार व ग्राहक भी इस अभियान में सहयोग करने को तैयार थे, मगर गांधी जयंती के दूसरे दिन ही प्रधानमंत्री जी ने यह कार्य 2022 तक करने की बात कह कर गाय के प्लास्टिक मुक्त भोजन की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। बताया गया कि लोगों को प्लास्टिक के उपयोग नहीं करने के लिए जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। जिस तरह गरीब की चर्चा अब तक मंच पर होती रही है, शायद वैसे ही गाय बचाने व गन्दगी हटाने की चर्चा भी सिर्फ भाषणों तक ही सीमित हो जाएगी। अच्छा होता यदि प्लास्टिक प्रदूषण के सांप के मुंह पर वार करके इसकी उत्पादक फैक्ट्रियों को ही बन्द किया जाता, मगर सरकार सांप के बिल व पूंछ पर हल्के बल प्रयोग कर सुर्खियां बटोर रही है, तो फिलहाल गरीब की तरह गाय और गन्दगी की चिन्ता भी मंचों पर बनी रहेगी।

समाजसेवा के प्रेरणा 'दीप' कोठारी

भारतीय संस्कृति सदियो से मानवतावाद की पक्षधर रही हैं। मानव सेवा और समाजसेवा के साथ प्रकृति और पर्यावरण के प्रति भी सकारात्मक दृष्टिकोण रखा गया है। शास्त्रों में हर पंथ और धर्म की किताबों में सेवा को धर्म बताया गया है। समाज सेवा से बड़ा कोई पुण्य कार्य नहीं, समाजसेवा नि:स्वार्थ भाव से की जाए, तो मानवता का धर्म सही मायने में निभाया जा सकता है। आज समाज जिस दिशा में जा रहा है, उसे देखकर ऐसा अहसास होता है कि इन्सानियत और आत्मीयता का अभाव होता जा रहा है, मगर समाज में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो समाज सेवा करके मानवता का परिचय देते रहते हैं।

आज हम परिचय देते 'माटी का लाल' कॉलम में श्री दीप चंद कोठारी के बारे में। वो नगर की एक ऐसी शख्सियत थे, जिनका नाम जैसा था, वैसा ही कर्मशील व्यक्तित्व उनका रहा। उनका जन्म 22 जुलाई 1932 को श्री उदयराम व मां गेन्दी बाई के प्रथम पुत्र रत्न के रूप में जैन समाज के सामान्य कोठारी परिवार में पड़ासली (राजसमंद) में हुआ। वे जब 11 वर्ष की उम्र के थे, तब पिता का देहान्त हो गया। परिवार की जिम्मेदारी माता के कंधो पर आ गई। तीन पुत्र व तीन पुत्रियों सहित बड़ा परिवार और आर्थिक स्थिति कमजोर थी, मगर उनकी मां ने हिम्मत नहीं हारी और हाथों से घट्टी पीस पीस कर परिवार का पालन पोषण किया और दीपचंद ने भी कम उम्र में बम्बई जाकर नौकरी की और फिर किराणे की दुकान लगाई और माता सहित अपने दोनों भाई पन्ना लाल व गणेश लाल को बम्बई ले गए। वे खुद परिस्थितिवश चौथी क्लास से आगे नहीं पढ़े, मगर दोनों भाईयों को पुत्र की तरह समझ पढ़ाया। भाई गणेश को बी.कॉम करवाई और आत्मनिर्भर बनाया और स्वंय के साथ भाई बहनो की भी शादियां करवाई। बाद में तीनों भाइयों ने कपड़े और ज्वैलरी का कारोबार गौरेगांव, बम्बई में किया, जो आज भी इन सभी के पुत्र कर रहे हैं। दीपचंद में समाजसेवा करने का जुनून था। गौरेगांव पार्श्व संस्था के संस्थापक रहे व वहां राजस्थान हॉल के निर्माण के लिए चंदा एकत्र करवाया व हॉल के ट्रस्टी भी बने।

1975 में बीमार मां की सेवा, व्यवसाय व समाजसेवा के लिए कांकरोली में रहने लगे और कोठारी स्टोन नाम से जलचक्की पर पत्थर घिसाई की मशीन लगाकर पत्थर बेचने का कार्य शुरु कर दिया। आचार्य हिमाचल सुरी जी के आदेश से मेवाड़ देशो उद्धरक आचार्य जितेन्द्र सुरिश्वर जी से धार्मिक कार्यों में जुड़े और करीब 30 मंदिरो का जीर्णोद्धार समाजजन के सहयोग से करवाया। सर्वप्रथम दयालशाह किला पर धर्मशाला जीर्णोद्धार का निर्माण करवाया, तलेटी मंदिर स्थापना व संपूर्ण भोजनशाला का निर्माण अपनी देख रेख में करवाया। भोजनशाला आज भी कनकमल लोढ़ा के सहयोग से चल रही हैं। शंखेश्वर पेढ़ी से 4 करोड़ का बजट पास करवाया। मंदिर निर्माण व जीर्णोद्धार का कार्य आज भी चल रहा है और पूरी पहाड़ी को पर्यावरण हित में पौधे लगाकर वर्षो पहले हरा भरा करने की मुहिम चलाई तो आज किले की पहाड़ी हरी भरी हो गई। दयालशाह किला पर गुरू मंदिर की ध्वजा का सौभाग्य भी उनकी जन सेवा भाव की वजह से कोठारी परिवार को मिला हुआ है। कांकरोली में जैन मंदिर जो 52 वर्षो से बंद था, खुलवा इस मंदिर को भेरू तारक धाम ट्रस्ट के सहयोग से संपूर्ण नवीनीकरण करवाया, जिसकी ध्वजा भी आजीवन के लिए कोठारी परिवार को मिली है।

वे महावीर मंच संस्थापक, अध्यक्ष व मूर्ति पूजक जैन समाज कांकरोली अध्यक्ष, महावीर इन्टरनेशनल के संस्थापक और अध्यक्ष भी रहे। जन सहयोग से संस्था द्वारा गांव गांव में मेडिकल केम्प, प्याऊ, पौधरोपण, आंख शिविर व संस्था भवन हेतु प्लॉट खरीदा, आमजन की सुविधा के लिए सलूस रोड़ श्मशान में जन सहयोग से कमरे, टीनशेड लगवाए व हैंडपम्प खुदवाया, श्मशान में लकड़ी की व्यवस्था की जिम्मेदारी कई वर्षो तक खुद ने ली। तत्कालीन नगरपालिका चैयरमेन महेश जी पालीवाल से अनुरोध कर विद्युत पोल लगवा लाइट की व्यवस्था करवाई थी।

मादड़ी चौराहे पर गोशाला के लिए निशुल्क भूमि दान करवाने में भी अहम भूमिका अदा की। आज वहां 400 से ज्यादा गायों का पालन पोषण हो रहा है। कांकरोली में बालिका स्कूल की जमीन आवंटन कराने व कमरे बनवाने में भी सक्रिय भूमिका निभाई। फिर वे राजसमंद पर्यावरण समिति के अध्यक्ष रहे। आवरी माताजी (अंहिसा प्रचार समिति) चितौड़ के दो बार अध्यक्ष रहे। वहां 25 कमरों का निर्माण, भोजनशाला, बोरवेल, पानी की बड़ी टंकी व सम्पूर्ण फर्नीचर का कार्य समस्त मेवाड़ व बम्बई के जैन समुदाय की तरफ से करवाया। समिति की तरफ से आवरी माता मंदिर में आज भी दोनों समय भोजन की व्यवस्था सुचारु रूप से चल रही हैं।

भोजावतो का गुड़ा, राजसमन्द में भैरूजी का मंदिर में सड़क निर्माण व पहाड़ी के समतल करके पौधरोपण करवाया। प्याऊ, व स्कूल और धर्मशाला का कार्य निरन्तर 30 वर्ष तक करवाते रहे। उन्होंने पहाड़ी पर टंकी निर्माण करवा बोरिंग करवाकर पाइप लाईन से गांव में पानी पहुंचाया।

जन सहयोग से उस समय मात्र 60 हजार रुपए हुए। ये देख तत्कालीन कलक्टर दीपक उत्प्रेति ने योजनाबद्ध कार्य की खूब प्रंशसा की। साथ ही प्रशासन द्वारा इसी तरह कार्य करवाने की प्रेरणा लेने की अधिकारियों को सलाह दी। दीपचंद जी से प्रभावित होकर श्री श्यामसुन्दर पालीवाल ने पिपंलात्री को निर्मल बनाने पर कार्य कर सफल हुए।

दीपचंदजी के साथ पूरा कोठारी परिवार

कोठारी जी समाजहित और नगरहित में ठोस कार्य करने में विश्वास रखते थे। उनकी सोच थी कि मानव जीवन में अपने और परिवार के लिए तो सब करते है, मगर मानव सेवा और समाज सेवा करना भी जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। वो भी आडम्बर रहित होकर समाजहित में वो झोली फैलाकर दान मांगने में भी परहेज नहीं करते व पहले स्वयं आगे आकर तन, मन, धन से सहयोग करते व नाम की जगह सेवा कर्म को महत्व देते थे। छोटे मोटे जनसेवा के कार्य करके थोथी वाहवाही लुटने और दिखावे से वो परहेज करते थे। उनके कार्य के सकारात्मक तरीके की वजह से दानदाता भी उन्हें दिल खोलकर तन, मन, धन से सहयोगी बन कर साथ देते थे। उनके सेवा भाव पर महावीर इन्टरनेशल संस्था ने सेवा श्री सम्मान से नवाजा। उनके सहयोगी और मित्रों में महेन्द्र कोठारी, रतन बापना, ईश्वरचंद शर्मा, डूंगरसिंह कर्णावट, रोशन शिशोदिया (ओड़ा वाले), बाबूलाल चपलोत, जगदीश लड्ढा, भंवरलाल जी, हरगोविंद पालीवाल, प्रकाश पालीवाल, हरकलाल बापना, लीलाधर पालीवाल आदि दीपचंद जी स्वयं सुरेश जी कावड़िया से से बहुत प्रभावित रहे और उन्हें प्रेरणा श्रोत मानते रहे।

दीपचंद के समाजसेवा और मानवीय दृष्टिकोण के पीछे मां गेंदी बाई के बचपन में दिए संस्कार तो थे, साथ ही उनकी बाल विधवा भुआजी नातीबाई लोढ़ा के धार्मिक एवं जनहित के कार्य करने के लिए प्रेरणादायी विचार भी थे। जीवन साथी के रूप में पत्नी संतोषी देवी ने भी कोठारी जी के जनसेवा में सहयोगी की भूमिका निभाई और परिवार के प्रत्येक सदस्य को स्नेह और प्रेम माता के समान दिया। उनके छोटे भाई बहनों को कभी माता पिता की कमी महसूस होने नहीं दी। परिवार में मुखिया की तरह मान सम्मान पाया।

संतोषी जैसा नाम था, वैसे ही गुण उनकी पत्नी में थे। दीप चंद के देहान्त के सालभर पहले उन्होंने देह त्याग दी। कोठारी जी विगत ग्यारह वर्ष पहले उम्र के आखरी पड़ाव में फिर से अपनी कर्मभूमि मुम्बई प्रस्थान कर गए और परिवार व समस्त भाई बन्धु के साथ वही निवास करने लगे। आपका आत्मविश्वास इतना प्रबल था कि लकवे की बीमारी के तीन दौरे पड़ने के बावजूद फिर ठीक हो गए। आपसे आपका नियमित ईलाज करने

मां के साथ तीनों भाई।

वाला डॉ. इतना प्रभावित था कि कभी फीस नहीं लेता था।

कर्मशील व्यक्तित्व के धनी दीपचंद कोठारी दीपक की तरह समाजसेवा से प्रकाश पुंज फैलाकर युवा पीढ़ी को सेवा भाव का मार्ग बताकर सदा के लिए एक मिसाल कायम करके 9 जून 2019 को 88 साल की उम्र में अपने पीछे दो पुत्र प्रकाश चन्द्र, विनोद कुमार, तीन पुत्रियां देवी, विमला, अरूणा और समस्त भरा पूरा परिवार छोड़ अपनी कर्मस्थली गौरेगांव, मुम्बई में अन्तिम सांस लेते हुए स्वर्ग सिधार गए, मगर उनके बेमिसाल व्यक्तित्व और सच्चे समाजसेवी छवि की वजह से जनमानस के दिलो में याद बनकर सदा दीप की तरह जगमगाते रहेंगे।

नगर के प्रभुत्व नागरिको से और उनके पुत्र प्रकाश जी कोठारी से व नीलेश जी पालीवाल वकील साहब से दीपचंद जी के जीवन की कई महत्वपूर्ण जानकारी मिली। सभी का आभार व्यक्त करते हुए अनुपम कृतित्व को लेखनी में ढ़ालना मैं भी सौभाग्य मानते हुए आपसी महान विभूति को कोटि कोटि नमन करता हूं।

सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
9414621730

यशवंत का ध्येय आहत की सेवा

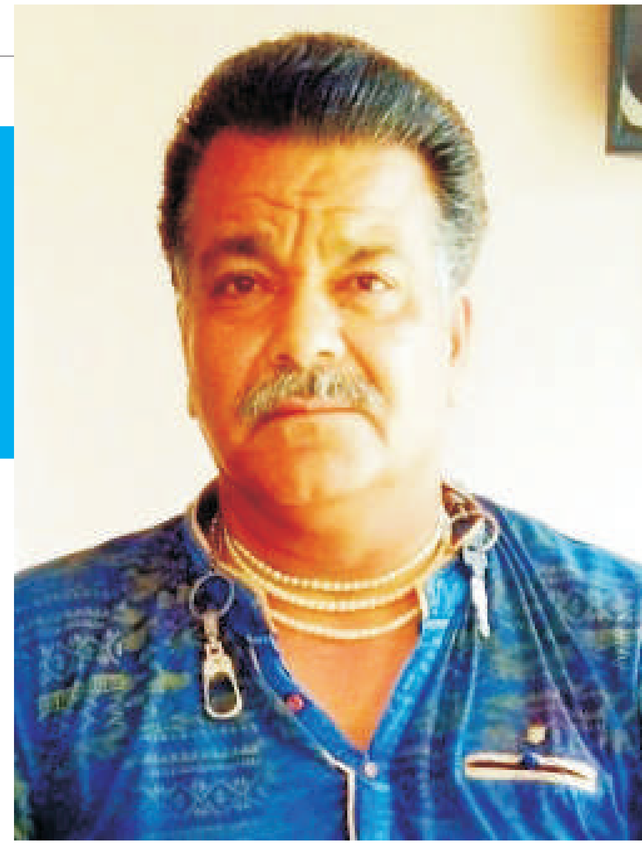

राजसमंद की धरती एक ऐसी धरती है, जहां पर कई हीरे गुमनामी में रहकर आनंद उठाते हुए नजर आ ही जाते हैं। यहां आनंद का अभिप्राय एक बात पर बहुत निर्भर करता है। क्योंकि यहां के लोग यही कहते हुए नजर आएंगे कि आज के आनंद की जय और यह सच भी है। क्योंकि कल किसने देखा है, वह आज में है। इस पल में है, ऐसा नहीं की यहां लोग अपने स्वयं पर खर्च करके आनंद की अनुभूति महसूस करते हैं।

यह वे लोग हैं, जो दूसरों की खुशियों में अपनी खुशियां ढूंढते हुए नजर आते हैं, उसके लिए वह सर्वस्व न्योछावर करने में भी नहीं चूकते हैं। हां हम आज एक ऐसे ही व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं, जो दूसरों को खुशियां देने में खुश नजर आते है, इनका परिवार प्रभु श्री द्वारकाधीश के साथ आए हुए बृजवासी चौधरी (जाट) समाज से तालुकात रखता हैं।

कांकरोली के मंदिर मार्ग सूरजपोल जाट गली में रहने वाले श्री यशवंतसिंह चौधरी एक ऐसी गुमनाम शख्सियत है, जो इंसान के साथ साथ जीव, जंतु, पशु, पक्षी और प्रकृति के लिए सोचते हैं और उनके लिए हृदय से कार्य करते हैं।

इनका बचपन अभावो में गुजरा। पिता लक्ष्मीनारायण जी चौधरी व मां श्रीमती बबली बाई की तीसरी संतान के रूप में 11 जून 1963 को यशवंत सिंह चौधरी का जन्म कांकरोली में हुआ। पिता पर अपने परिवार की जिम्मेदारी तो थी ही, उसके साथ आठ बहनों की जिम्मेदारी भी उनके कंधों पर ही थी। इन सभी हालातों को देखकर यशवंत ने दसवीं तक ही पढ़ाई की और 17 वर्ष की उम्र में ही जेके टायर इंडस्ट्रीज में कार्य करने लग गए। उस वक्त उन्हें पांच रुपए प्रतिदिन के हिसाब से मेहनताना मिलता था। वह उसमें से कुछ पैसे अपने पास रख के बाकी सारे पैसे अपने पिताजी को दे देते थे।

दीपावली की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
रॉयल मार्बल एंड ग्रेनाईट
Supplier of All Kinds Marble Slabs,
Green, Granite & Tiles Et.
प्रो.- एस.एन. कुंवर
Mob. 9214035786, 7725999777
Kankroli Distt. Rajsamand (Raj.)

नौकरी के 6 वर्ष बाद इनकी शादी नाथद्वारा निवासी पूनम चौधरी के साथ हुई और उनसे दो बेटे और एक बिटिया का जन्म हुआ। जब बिटिया का जन्म हुआ, उसके बाद उनकी माली हालत भी सुधरने लगी। धीरे- धीरे तनख्वाह भी बढ़ने लगी, लेकिन इनको तो कुछ और ही मंजूर था।

वह अपने घर गृहस्थी को चलाने के लिए कड़ी मेहनत करते थे। साथ ही जहां भी इन्हें लगता, वहां निस्वार्थ भावना से सहयोग करने लग जाते थे। श्री द्वारकाधीश के परम भक्त यशवंत जब प्रभु के दर्शन करने जाते, तो राजसमंद झील के जलधारा घाट पर जाना उनकी दिनचर्या में था। वहां बाहर से आए हुए गुजराती दर्शनार्थी कबूतरों को

चुगने के लिए दाने डालते थे। उस वक्त वहां सीढ़ियों पर कोई रेलिंग नहीं थी वहां कई कुत्ते बैठे रहते और मासूम कबूतरों का शिकार करके उन्हें मार कर खा जाते थे।

यह देख कर यशवंत की आंखें भर आती थी। दिल में दर्द उठने लगता था, आखिरकार उनसे रहा नहीं गया और उस वक्त के नगरपालिका चेयरमैन महेश जी पालीवाल को पूरी व्यथा से अवगत कराया। महेश जी ने तत्काल वहां पर रेलिंग का निर्माण करवाया। अब वहां कुत्ते नहीं आ सकते थे, लेकिन जो दर्शनार्थी वहां दाना डालते थे। उसके कारण वहां पर बहुत गदंगी हो जाया करती थी और वह आनाज सड़ने से दुर्गंध फैलाता रहता था, जो मंदिर के पवित्र वातावरण को प्रभावित करता था। यह सब देखकर इन्होंने प्रतिदिन वहां की सफाई की जिम्मेदारी स्वयं ले ली, जो 16 साल से आज तक अनवरत जारी है। शाम होते ही एक झाड़ू लेकर यह शख्स निकल पड़ता है राजसमंद जलघरा घाट की उन सीढ़ियों पर और पूर्ण रूप से सफाई करके वहां की आभा को बढ़ा देता है।

वहां पर इन्होंने पक्षियों के पानी पीने के लिए व्यवस्था नहीं होने पर उनके पानी की कुंडियों का भी निर्माण करवाया, जिसमें वह तीन चार बार दिन में पानी भरते हैं और उनकी नियमित सफाई भी करते हैं। जब झील खाली हो गई थी, तो यह शख्स बाहर हैंडपंप से प्लास्टिक के बारदान में पानी भर भर के उन कुंडियों में पानी भरता था। जहां आज हम कई जगह ऐसे दृश्य भी देखने को मिल जाते हैं कि घर में कोई बुजुर्ग चारपाई पर बीमार पड़ा हुआ है, उसके खून के रिश्ते वाले भी उसे पानी पिलाने से कतराते हुए नजर आते हैं। वहां यह शख्स अनबोले पक्षियों के लिए निरंतर इस कार्य को अंजाम दे रहा है। यह मानवता के लिए बहुत बड़ी सीख की बात है।

इनका अंदाज सबसे जुदा है, किसी भी गरीब असहाय पर इनकी नजर पड़ती है, तो तुरंत उसकी मदद करना अपना कर्तव्य मानते हैं और यथासंभव इनका यही प्रयास रहता है कि उनके कष्टों को कैसे कम किया जाए। क्योंकि यह कहते हैं कि जब हम किसी के कष्ट हरते हैं, तो प्रभु हमारे कष्टों को भी जरूर हरेगा। इन्होंने अपनी नौकरी बहुत ही ईमानदारी से निभाई है।

जब इनका फैक्ट्री में कार्य पूर्ण हो जाता था, तो यह हर मशीन पर जो वर्कर काम कर रहे होते थे, उनको पानी पिलाकर उनकी थकान को कम करने की कोशिश करते थे। इन्होंने जेके इंडस्ट्रीज में भी पक्षियों के लिए परिंडे बंधवाए और उसमें निरंतर पानी भरने और उन्हें साफ करने का भी संकल्प के रूप में कार्य किया। यथासंभव उनको दाना पानी की व्यवस्था को भी बखूबी अंजाम दिया, इनको प्रकृति से काफी लगाव रहा है।

इन्होंने वहां कई पेड़ पौधों को भी लगाया और उनको बड़ा करके उनकी निरंतर देखभाल भी की। जेके फैक्ट्री में इन्होंने एक कृष्ण का मंदिर भी बनवाया। उसके पीछे इनकी यही धारणा थी कि यह कारखाना है, यहां पर लोग मशीनों पर कार्य करते हैं, दुर्घटना कभी भी हो सकती है। इन सभी श्रमिकों की यह ठाकुर रक्षा करेगा।

पूर्ण रूप से अध्यात्म पर जीने वाला यह व्यक्ति बिना लोभ, लालच, मोह माया के कार्य को अंजाम देता हुआ नजर आ ही जाता है। प्रभु श्री द्वारकाधीश मंदिर के गोवर्धन चौक में आठ माह से निरंतर फूलों की रंगोली बनाकर मंदिर की शोभा में चार चांद लगाने की जिम्मेदारी भी इन्होंने संभाल रखी है।

इसके लिए यह किसी से पैसे नहीं लेते हैं और स्वयं के खर्च से यह कार्य करते हैं। इन्होंने अपने सेवा कार्य करने की कोई सीमा तय नहीं कर रखी है, जहां इन्हें लगता है, उस राह में यह चल पड़ते हैं। पशु पक्षी, जीव जंतु प्रकृति मनुष्य की निस्वार्थ भावना से सेवा करने के लिए राजसमंद की ऐसी गुमनाम शख्सियत को हम दिल से सलाम करते हैं और इनकी सेवा भावना से सीख लेते हुए जीवन में नेक कार्य करने की शपथ लेते हैं।

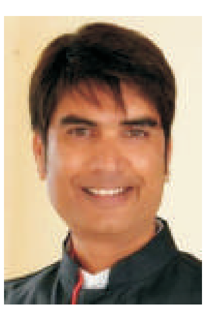

राहुल दीक्षित "RD"
काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद
मो. 90010-11755

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise With Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

नवरात्र, दशहरा एवं दीपोत्सव की हार्दिक बधाई एवं मंगल शुभकामनाएं

Himanshu Singh Chandrawat
M. 94141 74657

02952-220135 Off.

NEELKANTH TRAVELS

Contact For 3X2 & 2X2
A.C. & Non A.C. Luxury Buses

Bus Stand, Kankroli-313324 (Raj.) e-mail : heman9999@rediffmail.com

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी

होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा,
मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।

दिलीप जैन

मो. 9214384205 9602997715

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज
रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर

राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

"SHREE"

Tension®

SHOWROOM

Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt

धमाका ऑफर

लोग सस्ता कहते है, हम सस्ता देते हैं....

ब्राण्डेड शर्ट

1 पीस

₹ 299 में

ब्राण्डेड जीन्स

1 पीस

₹ 499 में

शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास

100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)

Mob. 8769955630, 7230059101

राजसमंद नगरपालिका के पहले अध्यक्ष थे श्री बिहारीलाल ब्रजवासी ठाकुर

सन् 1899 में श्री द्वारकाधीश मन्दिर में श्री जमनादास ब्रजवासी ठाकुर अधिकारी थे। द्वारिकाधीश प्रभु की अनेक स्थानों पर जमीन जायदाद और सम्पतियां थी। अत: श्री जमनादास को सन् 1899 में ही गांव देवाली उस समय जिला कोटा व वर्तमान में जिला बांरा तहसील अटरू में प्रभु की जमीन व सम्पतियों की देखरेख हेतु देवाली गांव भेज दिया गया। वे अपने परिवार सहित वहां चले गए और अपना कार्य करने लगे। वहां सन् 1902 में उनके घर एक बालक ने जन्म लिया, जिनका नाम उन्होंने बिहारीलाल रखा। देवाली गांव में ही उनका बचपन बीता, और किशोरावस्था तक वे वहीं प्राथमिक स्तर की पढ़ाई पूरी कर पाए, तभी एक हृदय विदारक घटना घटी और श्री जमनादास का प्राकृतिक प्रकोप लाल बुखार से स्वर्गवास हो गया।

श्री बिहारीलालजी अपने छोटे भाई-बहनों व मां सहित अपने बड़े भाई श्री नारायणलाल के साथ पुन: कांकरोली आ गए। मन्दिर में नौकरी करने लगे, पर उन्हें यह काम रास नहीं आया तो उनके बड़े भाई श्री नारायण ने उन्हें अपनी मौसी के पास गुजरात के सुरत शहर में काम धन्धा करने के लिए भेज दिया। वे अपने छोटे भाई के साथ सुरत चले गए। सुरत में कई छोटे-मोटे काम करते करते उनका परिचय रंगील भाई जो उस समय सुरत में एक ड्राईविंग स्कूल चलाया करते थे, से हो गया। दोनों भाई रंगील से मोटर ड्राईविंग का प्रशिक्षण लेने लगे और कुछ ही समय में वे अच्छे ड्राईवर बन गए और सुरत में ही ट्रक, कार, बस चलाने लगे। लगभग वे 12 वर्ष तक सुरत में मोटर ड्राईविंग का काम करते रहे। इसी दरमियान देश की आजादी का आन्दोलन भी जोर पकड़ चुका था। गुजरात में भी जो उस समय महाराष्ट्र का हिस्सा था, सरदार पटेल और गांधी की आंधी चल रही थी कि ये संयोग ही था कि श्री

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

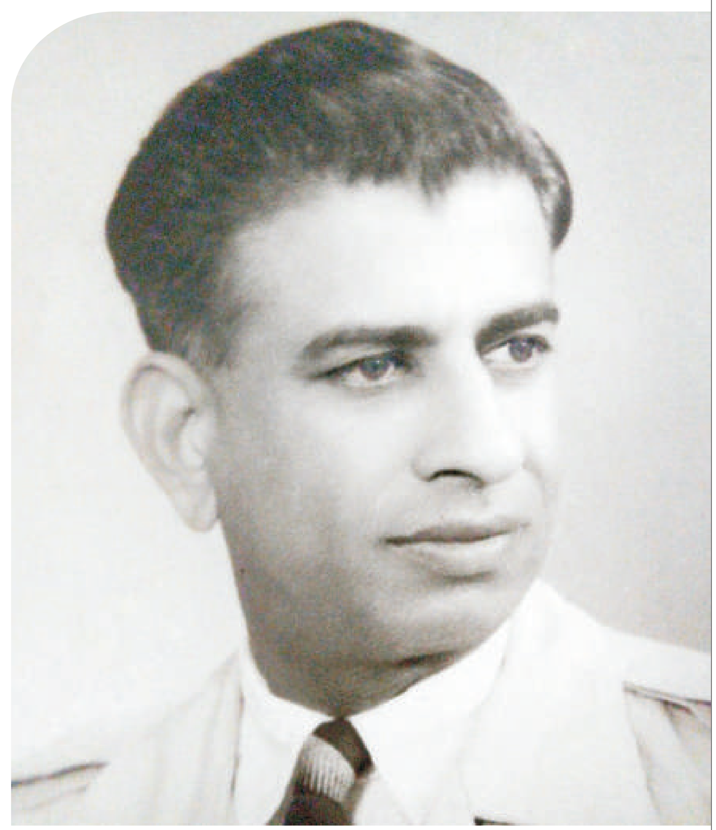

बिहारीलाल को सरदार पटेल की मोटर कार चलाने का काम मिल गया। वे कद काठी में लम्बे चौड़े और तगड़े, हट्टे-कट्टे जवान थे। रंग भी उनका गोरा चिट्ठा था, लोग सहज ही उनकी ओर आकर्षित हो जाते थे। सरदार पटेल के ड्राईवर हो जाने से उनका उनसे भी अच्छा खासा संबंध हो गया था। यह समय 1930 का था, जब सुरत के बाल डोली किसान आन्दोलन में पटेल की अहम भूमिका थी। वे इस आन्दोलन से अंग्रेज हुकूमत को चुनौती दे रहे थे। गांव-गांव जाना, संगठन को मजबूत करना, ऐसे समय में रात-दिन मोटर को एक स्थान से दूसरे स्थान तक श्री बिहारीलाल ड्राईविंग कर बिना थके अपने काम को अंजाम दे रहे थे। सरदार वल्लभ भाई पटेल के दिल में आपके लिए स्थान बन गया और ऐसे में ही उन्हें एक और अहम काम सौंप दिया गया। एक गुप्त फाइल जिसकी आन्दोलनकारी पार्टी को जरूरत थी, अंग्रेजों के शिकंजें से मुक्त कराना था। इस काम को भी श्री बिहारीलाल ने तत्परता के साथ पूरा कर दिया और फाइल पार्टी कार्यालय को लाकर दे दी। पर अंग्रेजी हुकूमत को इसकी भनक लग गई। कोई कार्यवाही होती, इससे पहले ही वे अपने भाई के साथ सुरत छोड़ कांकरोली भाग आए।

"SHREE" Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

कुछ दिन गुपचुप से रहे और फिर मन्दिर में नौकरी के लिए मांजी महाराज के पास पहुंच गए और ड्राईवर की नौकरी की अर्जी लगाई, पर किसी कारणवश बात नहीं बनी, तब आपने उदयपुर के सरदार माखन सिंह से सम्पर्क साधा और एक छोटी सी बस कांकरोली से नाथद्वारा जो पहली बस सेवा प्रारम्भ की और वे उनमें सफल भी रहे।

इसी दौरान कांकरोली महाराज श्री के यहां भी महाराणा ने रोल्स कार व अन्य कारें भेंट में दे दी, जिन्हें चलाने के लिए उन्हें श्री द्वारकाधशी मंदिर में छोटे महाराज की कार चलाने की नौकरी मिल गई।

इसी दौरान 1948 में रियासतों के एकीकरण के सिलसिले में श्री वल्लभभाई पटेल उदयपुर आए, तो मेवाड़ प्रजा मण्डल ने उनका पुरजोर स्वागत किया और एक सभा का आयोजन भी किया, जिसमें हजारों की तादाद में लोग इकट्ठा हुए। श्री बिहारीलाल भी उस सभा में गए और पटेल को देखने और सुनने के लिए जाजम पर जा बैठे। थोड़ी ही देर में पटेल की निगाह जब बिहारीलाल पर पड़ी, तो उन्होंने मंच से ही उनका नाम लेकर पुकारा और उन्हें अपने पास बुला लिया। उस समय श्री माणकलाल वर्मा, श्री मोहनलालजी सुखाड़िया, श्री बलवन्तसिंह मेहता आदि अनेक मेवाड़ प्रजा मण्डल के नेता बड़े आश्चर्य से बिहारीलाल को देखने लगे।

पटेल ने श्री बिहारीलाल की सेवा और उनके कार्य के बारे में उन सबको बताया, तब से ही वे उन सभी नेताओं की निगाह के अन्दर आदर के पात्र बन गए और जब राजस्थान सरकार का गठन हो गया, तो निकाय नगरपालिका राजसमंद के वे सन् 1951 में पहले अध्यक्ष बनाए गए। आपके सभी राजस्थान के नेताओं से अच्छे संबंध थे और रहे।

अत: राजसमंद की इस सभी व्यवस्थाएं आप ही की राय से की जाने लगी। काम सही और सुचारू रूप से चले। इसके लिए आपने कार्यवाहक अध्यक्ष पद पर एडवोकेट श्री रतनसिंह को मनोनीत कर दिया था। अपने व्यवसाय में आपने अपने छोटे भाई के

साथ मोटर ट्रावेल्स का काम बड़े पैमाने पर प्रारम्भ किया। आपके श्री निरंजननाथ आचार्य से भी बड़े घनिष्ठ संबंध थे, तभी तो दोनों ही मित्रों ने पंचवटी उदयपुर में आस पास अपने अपने बंगले बनाए और वहीं रहने लगे।

आपके तीन पुत्र श्री नवीन इंजीनियर, श्री मदनमोहन मधु, जगदीश उदयपुर में ही निवास करने लगे। ऐसे ही हंसी, खुशी आराम से वे अपना जीवन गुजार रहे थे। श्री बिहारीलाल दशहरे के रावण दहन को देखने महाराणा भोपाल स्टेडियम में 11 अक्टूबर 1978 को गए। दहन के बाद भीड़ की भगदड़ में वे घायल हो गए और अस्पताल में ही उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। सन् 1955 में कांकरोली हाईस्कूल और 1970 में हायर सैकण्डरी स्कूल बनवाने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। गर्ल्स हाई स्कूल के निर्माण में भी उन्होंने जी जान से जुटे। ऐसे मेरे गांव के शानदार व्यक्तित्व के धनी महापुरूष को कोटि कोटि नमन् और हार्दिक श्रद्धाजंलि।

अफजल खां अफजल
जलचक्की कांकरोली
मो. 98284-75288

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
करें कॉल : 94142-39648

नोट वाले गांधी

यह साल भारतीय इतिहास का बड़ा ही महत्वपूर्ण साल है। क्योंकि इस वर्ष गांधीजी की डेढ़ सौवीं जयंती है। आप सोच रहे होंगे कौन गांधीजी? अरे भाई! भ्रमियाना मत गांधी से तात्पर्य मोहनदास करमचंद गांधी से है। वहीं गांधी जिनके चश्मे से स्वच्छ भारत देखने की कोशिश की जा रही है। वही गांधी जो किसी न किसी चौराहे पर लाठी के सहारे टिके दिख जाएंगे। वही गांधी जिनके साबरमती आश्रम को प्रत्येक विदेशी मेहमान देखकर धन्य और दिखाकर छाती फुलाने लगते हैं। वही गांधी जिनके तीन बंदर आज भी दफ्तरों में दिख जाते हैं।

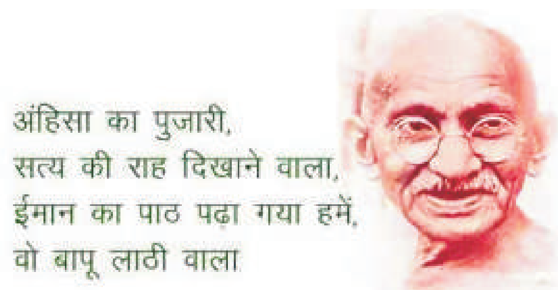

जनता मुंह बंद कर घूस देती हैं, कर्मचारी बिना चीख पुकार पर ध्यान दिए कान बंद कर धीरे से जेब में रख लेंगे और अधिकारी आंखें खोलकर देखने की जहमत भी नहीं करते हैं। वही गांधी जो बापू, महात्मा, राष्ट्रपिता आदि कई संबोधनों से महिमामंडित किए जाते हैं।

महात्मा गांधी जितने विश्व के अन्य देशों में पूजनीय समझे जाते हैं, उतने अपने देश में नहीं। जो लोग अपने घर को एक नहीं रख पाते, वो भी भारत विभाजन का दोषी गांधीजी को ठहराते हैं। एक सज्जन एक दिन कहने लगे कि गांधी जी को राष्ट्रपिता कहना चाहिए, ऐसा संविधान के किस अनुच्छेद में लिखा है? मैंने कहा कि श्रीमान आप किसके बेटे हैं, यह भी संविधान में लिखा होगा? बेचारे झेंप गए।

गांधी जी का उस दिन प्रभाव देखने मिला कि ऐसे बेहूदे सवाल में भी महाशय गांधी शब्द के साथ 'जी' लगाना बिल्कुल नहीं भूले।

संजय दत्त अभिनीत गांधीवादी विचारधारा पर आधारित फिल्म तो आप लोगों ने देखी होगी, जिसमें गांधीवादी सिद्धांतों को 'गांधीगीरी' कहा गया था। यानि गांधी जी आज भी मुतासिर करते हैं, पर स्वीकार करने में हिचकिचाहट होती है।

हम युवाओं में सत्य, अहिंसा, अन्याय के विरुद्ध आवाज बुलंद करने की लालसा तो रखते हैं, पर क्या कभी गांधीजी की जीवनी सुनाते हैं या कभी उनकी आत्मकथा पढ़ने को प्रेरित करते हैं? विचार करना चाहिए। भारत से अलग हुए पाकिस्तानी नेताओं ने कभी जिन्ना की बुराई की हो, ऐसा तो कभी सुना, पर हमारे देश के दिग्गज तथा छुटभैय्या सभी प्रकार के नेता नामक जीव गांधी जी पर प्रहार करने से नहीं चूकते हैं। जिनकी चुनरी दागिली है, वो भी गांधीजी के चरित्र पर कीचड़ उछालते हैं।

हम भारतीय भी अजीब हैं, बापू के प्रति कृतघ्न हैं, लेकिन उनकी फोटो को बड़ी हिफाजत से पर्स में रखते हैं और कहीं खो जाए, तो बेचैन हो जाते हैं। नोट वाले गांधी प्यारे तथा किताब वाले नकारे।

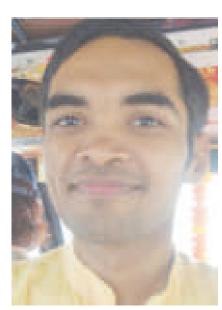

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट, उत्तरप्रदेश
मो. 86041-12963

"SHREE" Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

राजसमंद री झील

माने घणी सुहानी लागे रे या राजसमंद की झील,
पावन मनभावन ईरों ठंडो ठंडो नीर,
माने घणी सुहानी लागे रे या राजसमंद की झील।

मेवाड़ सिंहासन बैठ्या राणा राजसिंह,
झील वणा अमर वेग्या, बांध गोमती के तीर,
माने गणी सुहाणी लागे या राजसमंद की झील।

नो चौकी की पाल अजब की, देख अचंभों आवे,
नक्काशी ने देख मनख दांता तले अंगुली दबावे,
नौ अंका को योग गजब को, देख मन हरसावे,
लहराती चाले पवन, भरियो ठंडो नीर,
माने घणी सुहाणी लागे रे या राजसमंद की झील।

द्वारकाधीश प्रभु को मंदिर बणियो बड़ो भारी,
दूर- दूर सूं आवे दर्शनार्थी, ध्यावे नगरी सारी,
दर्शन कर झील देख, भुल जावे मन की पीर,
माने घणी सुहानी लागे राजसमंद की झील।

पूर्व दिशा की पाल या एरिकेशन केलावे,
सुबह शाम शहर का गणा लोग घुमवा आवे,
इण री हरियाली सबके मन में भावे,
फव्वारा की ठण्डी फुव्वार सु भींगे सकल शरीर,
माने घणी सुहानी लागे या राजसमंद की झील।

जद या झील भरे तो करसां रो मन हिळोळां खावे,
धरना, प्रदर्शन कर दौड़ दौड़ ने नेहरां परी छुडावे,
खेतां का गेला में भी पाणी घणो खराब वे जावे,
आपा सब मिल कोशिश करा,
इण रो पाणी व्यर्थ नी जावे,
झील ने भरवा को कोई ठोस करो प्रयास,
या तो है शहर की आत्मा और डील,
माने घणी सुहाणी लागे या राजसमंद री झील!

राम गोपाल आचार्य
काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद

मैं अपने मन मतवाला हूं

महलों के दीप तो देख लिए
कुटिया का अंधेरा दिखता नहीं
धनवानों की रोनक के आगे
निर्धन का दुखड़ा दिखता नहीं।
मैं ऐसा ही युग दृष्टा हूं
सुख और दु:ख का क्रेता हूं

दीपों की जगजग के आगे
लगता यूं कुटिया का दीपक
ज्यों सूरज के आगे कोई
छोटा सा दीपक दिखता नहीं
मैं ऐसी आंखों वाला हूं
मैं अपने मन उजियाला हूं

जब सुख सस्ता हो बाजारों में
तब दु:ख का भला क्या मोल लगे
बिन दिखा दिखा बिन मोल लगा
दु:ख सुख के हाथों बिकता नहीं
मैं ऐसा ही व्यापारी हूं
मैं अपने मन अधिकारी हूं।

हर दौर यहां ऐसा गुजरा
जो महलों का और कुटियों का
कर फर्क मिटाने का वादा
महलों में छुपा और दिखता नहीं
मैं ऐसे नसीबों वाला हूं
मैं अपने मन मतवाला हूं।

अफजल खां अफजल
जलचक्की, कांकरोली

वो एक लम्हा

वो एक लम्हा
जब तू मुझसे दूर जाता सा लगता है
दिल की धड़कनों का हाल
उस गुबार सा होता है
उलझनों में गिर सी जाती हूं
खुशी मनाऊ साथ बीते पलों की
या दर्द को जीऊं तुमसे दूर जाने की
एक एक क्षण भारी सा होता है
जब तू आंखों से दूर होता है
मुकरी (पहेली) सा लगता है जब तू
मेरी हरकतों को समझ के अनदेखा करता है
नज़रे जो मुझ से ही छुपा के मुझे ही तकता है
साथ भी मेरे ही रहता है
और तंग भी मुझे ही करता है
अपने चाहने वालो की फेहरिस्त
हमसे ही लगवाता है
और उस फेहरिस्त में आखिर में
सबसे ऊपर हमारा ही नाम लिखता है
तुम ही कह दो तेरे इस बर्ताव से हम
अपनी जिंदगी की खुशियां ढूंढ ले
या हर पल डर का हाथ थामे चले
तुम मेरी हर बात का सरल जवाब क्यों नहीं बनते
तुम मेरी जिंदगी की हसीन किताब क्यों नही
बनते
जिसे मैं अपनी ख्वाहिशों के ताजमहल बना लूं
वो घड़ी मेरी परवानगी का मान क्यों नहीं बनते

सीमा मेहता
आमेट, राजसमंद

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

प्रकृति की सीख

प्रति पल, प्रतिदिन हमारे आस पास बीत रहे अनेक दृश्य हमें बहुत कुछ सीख देने की कोशिश कर रहे हैं। समय के साथ बीती हुई हर घटना हमें एक सीख देती है। हमारे साथ वार्तालाप करता हुआ व्यक्ति, पेड़, पौधे, सड़के, हवा- पानी, बाजार, हमारा परिवार, नृत्य- संगीत ये सभी हमें प्रति पल हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। लेकिन चर्चा का विषय यह है कि हम इनसे कुछ सीखते भी है या नहीं ? क्या हम इनकी बारीकियों को जानने की कोशिश करते है ? शायद नहीं। तो आइए, जानते है कि ये ऐसे कौनसे घटनाक्रम है, जो हमें कुछ सीखाने की कोशिश कर रहे हैं।

घटनाक्रम 1 - पेड़ पौधे :

पेड़-पौधे हमें समर्पण का भाव सिखाते है। जैसे एक पेड़ अपनी शीतल पवन से, घने छायादार शाखाओं से हर प्राणी का मन मोह लेता है, वैसे ही हमें भी उस पेड़ से प्रेरणा लेकर हमारे आस-पास रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए, चाहे बदले में हमें उस व्यक्ति से कुछ न मिलता हो, हमें सदैव समर्पित रहना चाहिए। एक पेड़ कभी किसी भी व्यक्ति से निजी अपेक्षा नहीं रखता।

पेड़ ये अपेक्षा कभी नहीं करता कि उसे जो भी पानी पिलाएगा या जो भी उसकी देखभाल करेगा, उसे ही वो छाया, हवा व फल देगा। वह तो सभी के लिए सदैव तत्पर रहता है। पेड़ कभी अमीर, गरीब, जाति, वर्ग-भेद नहीं देखता और सबको एक ही नजरिये से देखता। क्षमतानुसार जो भी उसके पास उपलब्ध है, हमेशा पेड़-पौधे देते ही रहते हैं।

पेड़ सामाजिक एकता का प्रतीक है। वह हवा व छाया देते वक्त ये नहीं सोचता कि ये किस धर्म का है या किस समाज का है। वह सभी के लिए समान व्यवहार रखता है। ठीक वैसे ही एक पौधा अपने फूलों की सुगंध बिखेरता हुआ हर एक के मन में सदा के लिए बस जाता है। हर एक मन को सुशोभित कर देता है।

घटनाक्रम 2 - सड़कें :

वर्तमान में सड़कों के दो रूप देखने को मिलते हैं। एक अपनी स्वच्छता के लिए अपना अनोखा सुंदर रूप प्रकट करती है व दूसरी अपनी गन्दगी से प्रत्येक मानव में घृणा का भाव

उत्पन्न कराती सड़कें। हालांकि दूसरे प्रकार वाली सड़क की खास बात यह है कि उस सड़क की गंदगी का स्वयं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वो तो उस सड़क पर विचरण करने वालो और उसके पास रहने वाले लोगों का असली रंग प्रदर्शित करती है। हमारे आस- पास की गन्दी सड़कें हमें आईना दिखाती है, हमें हमारे चरित्र का हमें आभास कराती है। हम और हमारे रिश्तेदार कितनी आसानी से कह देते हैं कि अरे ! यहां की सड़कें कितनी गंदी है- छीं-छीं, गन्दी, सुगली और ना जाने क्या- क्या कहते रहते हैं हम। क्या इन शब्दों का प्रयोग कर हम बच पाएंगे ? जी नहीं। हम हमारे कर्तव्यों से पीछा नहीं छुड़ा सकते। कहते हैं जो गंदगी हमारे आस-पास पसरी हुई है, उतनी ही गंदगी हमारे मन में है।

पिछले कुछ वर्षों में एक बात सामान्य प्रतीत होती हुई दिखी है कि हम स्वयं कभी भी स्वच्छता, पर्यावरण के लिए व हमारे जीवन की बुराइयों को मिटाने के लिए किसी तरह का जन अभियान प्रारंभ नहीं करते। हम सदैव इसकी प्रतीक्षा में रहते हैं कि कभी कोई व्यक्ति नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर कर आएगा व वो बोलेगा तभी हम जागेंगे। यह बिल्कुल भी सही सोच नहीं है। स्वच्छ सड़के व स्वच्छ वातावरण हमारी स्वच्छ आत्मीयता का प्रतीक है।

"SHREE" Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

घटनाक्रम 3 – बाजार :

वर्तमान समय में बाज़ार का महत्व शनै: शनै: कम होता दिखाई पड़ता है। आजकल लोग सोशल मीडिया से अधिक खरीददारी करते हैं। उन्हें गलतफहमी होने लगी है कि सबसे बेहतर बाजार ऑनलाइन बाजार ही है। हमारे राजसमंद शहर के एक युवा कवि **हेमेंद्रसिंह जी चौहान** क्या खूब कहते हैं कि 'हमारे बाज़ार भी क्या बाजार है, हमारे बाज़ारों जैसी रंगत ऑनलाइन बाज़ारों में कहा। रामू की चाय, कुम्हार के मिट्टी के दीपक, दुकान मालिक से सामान खरीदते- खरीदते एक रिश्ते की शुरुआत हो जाना। कोई दुकानदार जाते ही पहले चाय मंगवाता है, तो कोई दुकानदार किसी भी सामान पर 1 रुपया भी कम नहीं करता।'

बहुत खूब कहा है कवि ने। सही मायनों में देखा जाए तो कवि के विचारों को आत्मसात करने की वर्तमान में आवश्यकता है।

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से
आप जयवर्द्धन
मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं
वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।
भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

हमारे गली मोहल्लों के बाज़ार, बाज़ार नहीं बल्कि एक परिवार है। बेहतर होगा कि हम भी इस वाकये से सीख ले और ऑनलाइन बाज़ार की ओर रुख़ ना करके गली मोहल्लों के बाज़ारों की रौनक बढ़ाएं। साथ देश के उज्वल भविष्य में योगदान दें। ताकि ये कहना न पड़े कि सरकारें कुछ कर नहीं रही है।

घटनाक्रम 4 – परिवार :

परिवार की अवधारणा तो मानो खत्म ही होती जा रही है। पूर्व में परिवार शब्द सिर्फ रक्त संबंध के मामलों में ही उपयोग में नहीं लिया जाता था, बल्कि विद्यालय संस्थाओं में भी उपयोग में लिया जाता था। जैसे किसी कार्यक्रम में निमंत्रण देने के लिए 'विद्यालय परिवार' शब्द उपयोग में लिया जाता था। अब विद्यालय परिवार तो दूर की बात, उसकी जगह अब अंग्रेजी में 'स्कूल स्टाफ' शब्द ने लिया है। यानी कि परिवार अब स्टाफ बन गया। वाह! अप्रतिम। हमारे समाज में परिवार दो प्रकार के बताए गए हैं। एक संयुक्त परिवार व दूसरा एकल परिवार।

एकल परिवार तेजी से बढ़ रहे हैं। संयुक्त परिवार अमीबा की तरह दो भागों में कटकर पृथक रूप से एकल परिवार हो गए हैं, जिनमें एक बेसहारा माता- पिता व दूसरे में पुत्र- पुत्रवधू व पौत्र। ये दोनों परिवार जीवन की दो अलग- अलग पहेलियां बन गए हैं, जिन्हें सिर्फ और सिर्फ संस्कार ही बुझा सकते हैं। इन दोनों परिस्थितियों से सीख लेकर हमें पुन: संयुक्त परिवार की और कदम बढ़ाने होंगे।

ऐसे कई मुद्दे है, जिनकों पुन: विचार में लाने होंगे और उनसे सीख लेकर समाज व संस्कृति को बचाना होगा।

विजय पालीवाल
काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद

हेठानी रो चटकारो

टपको टपको पाणी हंचै तो चरु चरवी भराई जावे। काणा हातां वाळो मनख पईसो न्ही जोड़ सके। घणा ऊंचे छाजे बैठवा वाळा धड़ाम देश्यी रा हेठे पड़े इज है। या वात वणज वौपार करवा वाळा ठाबंद जाणे। हादा वाणिया न घाट खाणिया रे ढींगला– पया रो वदेपो व्हेता टेम न्ही लागे। गामड़ा म्हे हेठजी रो धंधो ठीक ठाक चालतो, व्हे माल पूरो राखता। कमाई तो घणी न्ही ही, पण खरचो रीत सईज वेवतो। वणा रो नेम हो गराक् रे पग रो धुलो दकान तक अई जवे पछे गराक परो जावे तो वौपारी वणीन खोटी वीया।

मनख तो केवे भी है पईसा कोड़ी महाजना रे नके ईज टके। भागवान रे भूत कमावे, बारणे मूते न मईने आवे। काचो– पोचो वौपारी व्हे तोई केवावे सेठ साहब ईज।

हेठजी मेड़िया– गोखड़ा नी वणाया। बाप दादा रा केलूड़ा वाळा मकान मेईज रेवास हो। हेठाणी धन री जई लिछमी औरत ही, घर अवेरी न चालती। एक बालक हो, जो अस्कूल में आठमीं भणतो। गामा– गाम में काल वरस पड्यो, न चोरी चकारी घणी वेवा लाग गी। हेठजी खरीदी करवा मोटे गाम जाता अर टेम सर ईज परा आवता। घर हूनो नी राखता। एक दन हेठजी ने दपेरा में पर गाम जाणो पड्यो। हेठाणी ने भलावण देई ग्या, ध्यान राखजे। वेई जतरे तो आज परो आऊ, नी तो कालेईज आई सकूं। चोर अणी भाल में हा के कणी दन हेठजी परगाम जावे अर आपां हात साफ कर सकां।

चोरा वणी दन पूरी ओसान राख लीदी। नौ दस वज्या तक हेठजी नी आया। आधी रात अन्धारा में वे हेठजी रे घरे ऊपर वाड़ाऊ चढ्या अर धीरे धीरे डांडा रे ऊपला केलूड़ा हटावा लाग्या। हेठाणी री नींद खटपट हुणीन उचट गी। वणी यो भांपी लीदो के चोर आई ग्या है अर अबार थोड़ी क देर में गेहणा– गांठा लेई जाई। हेठाणी चतराई यूं भड़ला विछावणा में हुता बालक री गोदड़ी हलावती अर वराई ओ किसन रा दादा, किसन रा दादा, हुणजो डांडा केलू हाली रिया मनखी आई दिखे। चोरां होच्यो आपां तो ठाबंद भाल राखी, पण हेठजी तो आई ग्या। अबे जाग वेईगी है। गुवाड़ी में हाको वेई जाई। पकड़ाई ग्या तो जंतराई वेता देर नी लागेला। यो वचार करीन धीरे धीरे खसक्यान गेले वेई ग्या। हाते वाते काईज नी लाग्यो। काठी छाती करीन हेठाणी विछावणा में हगलो वतीरो हमझती री, चोर जाता रीया। हेठजी आया परबाते, वणाने रात रो वाकयो हुणायो। हेठजी बोल्या– कलेजो वणज करवा वाळा रे लारे घरां वाळी रो भी सवा हात रो कलेजो व्हे।

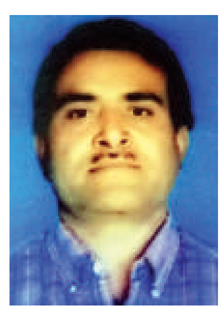

नगेन्द्र कुमार मेहता
शिक्षाविद् एवं साहित्यकार
भव्यकृपा हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी
तेलियो का तालाब, नाथद्वारा
मो. 98299-60055

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान
जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

कौन खुश है, आपसे- हमसे ?

पहले हर इंसान खुश रहने के साथ ही औरों को खुश रखने को लालायित रहता था। दूसरों को खुशी देने की खातिर लोग अपनी खुशी की बलि भी चढ़ा दिया करते थे, लेकिन मन में एक ही ध्येय होता था कि सामने वाले हमसे खुश रहें।

अपनी खुशियों को दरकिनार कर औरों को खुश रखने के जतन में कहीं भी किसी भी स्तर पर न कोई मलीनता थी, न कोई अपेक्षा। बस एक ही भाव था कि सामने वाला हमसे प्रसन्न रहे।

औरों को खुश कर या देखकर हमें आत्मीय प्रसन्नता और संतोष होता था और यही आत्मसंतोष हमारी खुशियों को इतना अधिक बहुगुणित कर दिया करता था कि उस जमाने के लोग परम संतुष्ट और मस्त हो जाया करते थे। उनके लिए यही एक पूंजी थी, जो वे लोगों को खुश रखकर या खुशी देकर जमा कर लिया करते थे।

निष्काम भाव से प्रदान की गई खुशी और सेवा हमेशा दुआओं का भण्डार देती हैं। यही कारण है कि बिना किसी कामना के औरों को प्रसन्न रखने व खुशियां बांटने का जो कोई निर्मल मन से जतन करता है, उसे बिना मांगे ही वह सब कुछ मिल जाता है, जो रुपए पैसों और सोने, चांदी हीरे देकर भी खरीदा नहीं जा सकता।

सेवाभावी, मन, वचन और कर्म के पक्के, ईमानदार और परोपकारी लोगों की दीर्घायु, आरोग्य तथा चेहरे की चमक- दमक का यही एकमात्र राज है, जिसे स्वार्थी, झूठे और खुदगर्ज लोग कई जन्मों में भी नहीं समझ पाते। हर खुशी का संबंध हृदय से है। चाहे बाहर कितना ही कुछ कैसा हो जाए, जो हमें खुशी देने वाला हो, लेकिन जब तक हृदय इसे पूरी तरह स्वीकार नहीं करता, तब तक हम अपने आपको न खुश कह सकते हैं, न खुश हो पाते हैं।

इसका मूल कारण यही है कि हमारी आत्मा को सब कुछ पता है। वह इसके पीछे के सारे राज, आडम्बर और हथकंडों को जानती है। इसलिए उसे अच्छी तरह पता होता है कि कौनसी खुशी दिखावटी, कृत्रिम, चुराई या छीनी हुई है और कौनसी खुशी वास्तविक। जब कभी कोई वास्तविक खुशी का मौका आता है। अपनी प्रतिभा, परिश्रम और बौद्धिक कौशल से कोई खुशी प्राप्त होती है, तब आत्मा अपने आप खुशी अभिव्यक्ति के सारे द्वारों को खोल देती है, जहां से होकर आत्मिक प्रसन्नता एवं संतोष की धाराओं का महाज्वार बाहर की ओर निकलता ही है। पर बहुधा ऐसा होता नहीं है। अब समय काफी बदल चुका है। हमें अपने को खुश रखने से ही मतलब रह गया है और हम वही काम करते हैं, जिससे हमारी खुशियां बनी रहें व बढ़ती रहें।

इसके लिए हमारे कर्म, स्वभाव और व्यवहार में कुटिलता, अपेक्षाएं पक्षपात और स्वार्थ भरने लगता है और हम अपनी खुशी तलाशने के लिए हर मामले में सकाम व्यवहार करते हैं। अपेक्षाओं और अपने नाजायज स्वार्थों, ऐषणाओं की पूर्ति तथा प्रतिशोध को पूरा करने के लिए दूसरे लोगों को खुश रखने के जतन में जुट जाते हैं।

हमें इनसे परे दुनिया से कोई सरोकार नहीं रहता है। इस मामले में हमारा पूरी तरह ध्रुवीकरण ही हो जाता है। अरबों लोगों से भरे शेष संसार को त्याग हम चंद लोगों को खुश करने में पूरा बहुमूल्य और दुर्लभ मानव जीवन गंवा दिया करते हैं। हर प्रकार का समर्पण कर दिया करते हैं। भोग-विलास और देहिक आनंद के सारे प्रबंधों में रमे रहते हैं। अपनी मानवता और संस्कारों को तर्पण कर तिलांजलि दे दिया करते हैं और भूत पलीतों, राक्षसों की तरह व्यवहार करते रहते हैं।

इन सबके बावजूद हमारी उद्विग्नता, अशांति और असंतोष कभी थमने का नाम नहीं लेता, बल्कि उत्तरोत्तर बढ़ता ही चला जाता है और यह दौर हमारे जिन्दा रहने तक यों ही बना रहता है। मरने के बाद भी हमारी गिनती उन अतृप्त आत्माओं या धुंधुकारी में होती है।

जब इतना सब कुछ जतन करने के बाद भी खुशी न मिले तो क्या समझा जाए। जबकि प्रसन्न रहना और प्रसन्नता देना मनुष्य का स्वाभाविक गुण धर्म है और जो ऐसा नहीं कर पाएं। देहधारियों को मनुष्य कैसे माना जा सकता है। खुशी जब से स्वार्थ और अपेक्षाओं के गलियारों से होकर आने लगी है, तभी से इसका अक्षत यौवन भंग हो

चुका है। निर्धन से निर्धन आदमी से लेकर महान से महान समृद्ध और वैभवशाली न खुद खुश दिखते हैं, न रह पाते हैं। न इनके आस पास रहने वाले लोग खुश हैं और न ये लोग औरों को खुशी दे पा रहे हैं। इसका मतलब यही निकाला जा सकता है कि व्यभिचारी गलियारों, अपेक्षाओं की धूल भरे रास्तों और स्वार्थ की हवाओं से भरे कर्म न खुद को खुश रख सकते हैं, न औरों को।

जमीनी हकीकत यही है कि कोई किसी से खुश नहीं है। जब हम अपने आप ही से खुश नहीं हैं तो औरों से खुशी पाने की अपेक्षा क्या करें। घर परिवार के सदस्य एक- दूसरे से खुश नहीं हैं, पड़ोसी, नाते- रिश्तेदार, मित्र, संपर्कित और सहकर्मी हमसे खुश नहीं हैं। हमारे इलाके के लोग हमसे खुश नहीं हैं। फिर हमारे जीने और अपने आपको सामाजिक प्राणी मानते रहने का क्या कोई अर्थ रह गया है।

खुश रहने और खुशियां पाने के लिए अपेक्षाओं से मुक्त होकर जीवन जीने का अभ्यास करें, निष्काम सेवा और परोपकार की आदत डालें और सभी के भीतर परमात्मा की उपस्थिति मानकर आत्मीय बर्ताव करें।

खुशी दिमाग का विषय नहीं है। गणितीय समीकरणों, समझौतों और षड़यंत्रों का विषय नहीं है, बल्कि खुश रहना, औरों को खुश करना तथा खुशियां बांटना देवीय कर्म है। इसमें आसुरी भावों का पूर्ण परित्याग जरूरी है, तभी खुशी प्राप्त हो सकती है। औरों को खुशी प्राप्त करने का सामर्थ्य प्राप्त हो सकता है।

डॉ. दीपक आचार्य
लेखक, चिंतक व साहित्यकार
बांसवाड़ा 94133-06077

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

स्वच्छ गांव निर्माण में करें सहयोग
चरागाह जमीन पर न करें अतिक्रमण
सुश्री अनुराधा वैष्णव — सरपंच
रामदास वैष्णव — उपसरपंच
करणसिंह — ग्राम विकास अधिकारी
-: ग्राम वासियों से अपील :-
◆ ग्राम पंचायत के समस्त निवासियों से अपील की जाती हैं कि अपने-अपने घरों में जलबद्ध शौचालयों का निर्माण करवाएं और उसका नियमित उपयोग करें। ◆ ग्राम पंचायत को खुले से शौच मुक्त (ओडीएफ) बनाए रखने एवं ग्राम पंचायत को साफ-सुथरा व निर्मल बनाने में सहयोग प्रदान करें। ◆ पर्यावरण संरक्षण के लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं। ◆ कचरे को कचरा पेटी में ही डालें। ◆ जागो अब जल के लिए, बचाओ उसे कल के लिए। ◆ सरकार ने संभाली हैं जल संचय की कमान, अब और बढ़ेगा राजस्थान का मान। ◆ पानी का नहीं कोई विकल्प, जल संरक्षण का ले संकल्प। ◆ हम सब हैं साथ, जल ग्रहण विकास अब अपने हाथ। ◆ जल की बचत अधिक उपज
सांसद आदर्श ग्राम पंचायत तासोल
पंचायत समिति व जिला-राजसमंद

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

दीपावली की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
Saruparia,s
श्री शशि
होटल एंड रेस्टोरेंट
ठहरने की उत्तम व्यवस्था
Rooms with A.C., T.V. & Coolers
Welcomes you for excellent service in boarding & lodging
02952-230099, 230199, 9414473171, 9414172291
जे.के. मोड, भीलवाड़ा रोड, कांकरोली जिला-राजसमंद 313324

An ISO -9001:2015

M. 9829445469, 9929495228

शाईन कम्प्यूटर्स

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

C.F.A (Tally)

पूर्ण व्यवसायिक कोर्स

GST/Tally ERP

SHINE

RS-CIT | Tally पूर्ण व्यवसायिक कोर्स | DCA | PGDCA | PDCA | Spoken English

राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान

शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469
शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

स्वच्छ गांव निर्माण में करें सहयोग
चरागाह जमीन पर न करें अतिक्रमण

कुसुम कुंवर राठौड़	खेमराज गाडरी	करणसिंह
सरपंच	उपसरपंच	ग्राम विकास अधिकारी

-: ग्राम वासियों से अपील :-

◆ ग्राम पंचायत के समस्त निवासियों से अपील की जाती हैं कि अपने-अपने घरों में जलबद्ध शौचालयों का निर्माण करवाएं और उसका नियमित उपयोग करें। ◆ ग्राम पंचायत को खुले से शौच मुक्त (ओडीएफ) बनाए रखने एवं ग्राम पंचायत को साफ-सुथरा व निर्मल बनाने में सहयोग प्रदान करें। ◆ पर्यावरण संरक्षण के लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं। ◆ कचरे को कचरा पेटी में ही डालें। ◆ जागो अब जल के लिए, बचाओ उसे कल के लिए। ◆ सरकार ने संभाली हैं जल संचय की कमान, अब और बढ़ेगा राजस्थान का मान। ◆ पानी का नहीं कोई विकल्प, जल संरक्षण का ले संकल्प। ◆ हम सब हैं साथ, जल ग्रहण विकास अब अपने हाथ। ◆ जल की बचत अधिक उपज

ग्राम पंचायत महासतियों की मादड़ी
पंचायत समिति व जिला-राजसमंद

सादर अनुरोध

पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के **जयवर्द्धन पत्रिका** की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए **जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर** शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।

संपर्क : 94142-39648

दीपोत्सव की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीमती दीया कुमारी
सांसद-राजसमंद

श्रीमती किरण माहेश्वरी
विधायक-राजसमंद

कुं. सुरेन्द्रसिंह चौहान
ठि. दमाला (सांगठ कला)

कुं. सुरेन्द्रसिंह चौहान

राणाराजसिंह मंडल युवा मोर्चा महामंत्री

दीपोत्सव की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीमती दीया कुमारी
सांसद-राजसमंद

श्रीमती किरण माहेश्वरी
विधायक-राजसमंद

श्रीकृष्ण पालीवाल
जिला महामंत्री-भाजपा

श्रीमती लीना पालीवाल
सरपंच

प्रेमसिंह राठौड़
उपसरपंच

अम्बालाल भोई-ग्राम विकास अधिकारी **समस्त वार्डपंच एवं ग्रामवासी**

-: ग्राम वासियों से अपील :-

◆ ग्राम पंचायत के समस्त निवासियों से अपील की जाती हैं कि अपने-अपने घरों में जलबद्ध शौचालयों का निर्माण करवाएं और उसका नियमित उपयोग करें। ◆ ग्राम पंचायत को खुले से शौच मुक्त (ओडीएफ) बनाए रखने एवं ग्राम पंचायत को साफ-सुथरा व निर्मल बनाने में सहयोग प्रदान करें। ◆ पर्यावरण संरक्षण के लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं। ◆ कचरे को कचरा पेटी में ही डालें। ◆ जागो अब जल के लिए, बचाओ उसे कल के लिए। ◆ सरकार ने संभाली हैं जल संचय की कमान, अब और बढ़ेगा राजस्थान का मान। ◆ पानी का नहीं कोई विकल्प, जल संरक्षण का ले संकल्प। ◆ हम सब हैं साथ, जल ग्रहण विकास अब अपने हाथ। ◆ जल की बचत अधिक उपज

ग्राम पंचायत मुण्डोल

पंचायत समिति व जिला-राजसमंद

प्रकाश पर्व दीपावली की समस्त जिलेवासियों को
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
दीपंकर विश्वास
मो. 9001029423
ज्योति मेडिकल स्टोर, सापोल

प्रकाश पर्व दीपावली की समस्त
जिलेवासियों को
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
समस्त संचालक मंडल सदस्य
सहकारिता से जुड़े, शोषण से बचे,
असली खाद-बीज व कम ब्याज दर पर ऋण,
सहकार योजनाओं का लाभ उठावें।
चतरसिंह चौहान-अध्यक्ष
नौजीराम लोहार-व्यवस्थापक
ग्राम सेवा सहकारी समिति घाटा (गजपुर)

प्रकाश पर्व दीपावली की समस्त
जिलेवासियों को
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
समस्त संचालक मंडल सदस्य
सहकारिता से जुड़े, शोषण से बचे,
असली खाद-बीज व कम ब्याज दर पर ऋण,
सहकार योजनाओं का लाभ उठावें।
प्रतापसिंह खरवड़-अध्यक्ष
ओमप्रकाश लोहार-व्यवस्थापक
ग्राम सेवा सहकारी समिति कांकरवा, पं.स. कुंभलगढ़

कन्हैयालाल पगारिया

भव्य शुभारम्भ

श्रीनाथ ट्रेडिंग कम्पनी
श्रीनाथ इलेक्ट्रोप्लाजा

सतीश पगारिया

श्रीनाथ इलेक्ट्रोविजन

(किचन, होम एवं इलेक्ट्रोनिक्स एप्लाईजेस) हॉलसेल व रिटेल विक्रेता

एक ही छत के नीचे घरेलु सामान की विशाल रेन्ज

0% ब्याज पर उपलब्ध

विवाह पैकेज लेने पर विशेष छूट

एक्सचेंज सुविधा

- पंखा - छत पंखा, टेबल पंखा, वॉलफेन, पेडस्टल फेन
- इनडेक्शन चुल्हा - (इलेक्ट्रीक गैस चुल्हा)
- L.E.D. 3D, T.V. टी.वी.
- फ्रीज, डी फ्रीज, वाटर कुलर
- वॉशिंग मशीनें
- सिलाई मशीन - पेरदान
- अटेचियां - बिफ्रकेस
- ट्रोली बैग
- स्कूल, कॉलेज, ऑफिस बैग
- गैस चुल्हा
- रूम कुलर
- प्रेस
- मिक्सर
- जुसर
- जुसर, मिक्सर ग्राईन्डर
- हैंड मिक्सर
- हैयर ड्रायर
- वाटर प्युरिफायर आर.ओ.
- म्युजिक सिस्टम
- हैडफोन - ईयर फोन
- किचन चिमनी
- कोफी मेकर
- होमथियेटर
- इलेक्ट्रीक केटल
- ईमरजेंसी लाईट
- माइक्रोवेब
- चोपर
- बर्तन सेट
- रोटी/खांखरा मेकर
- सेन्डवीज टोस्टर
- हैण्ड मिक्सर
- राईस कुकर
- वाटर बोतल
- एयरकंडिशनर (ए.सी.)
- वॉशिंग मशीन
- फुड प्रोसेसर
- पापअप टोसटर
- बीटर
- मोप मशीन
- प्रेशर जुसर
- हैयर स्टेनर
- हैयर कलर
- सारेगामां कारवां
- ब्लु टूथ स्पीकर
- गीजर
- किचन फैन
- गिफ्ट आईटम

द्वारकेश चौराहा, स्टेशन रोड, द्वारकेश वाटीका के सामने, पंजाब नेशनल से आगे कांकरोली

संपर्क 9414874111, 9468578444, 7014606851

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To